गुरुमैया देवेभ्यो नमो नमः

संतान को भूलना नहीं

संतान को भूलना नहीं

प्रकाशकः
तपोवन संस्कारपीठ
मु. अमीयापुर, पो. सुघड
जि. गाँधीनगर

आशीर्वादः
आगमदिवाकर गच्छाधिपति पूज्यपाद
आचार्यदेव जयघोषसूरीश्वरजी म. साहब

संवेदनाः
युगप्रधान आचार्यसम पूज्यपाद
पंन्यासप्रवर श्री चन्द्रशेखरविजयजी म. साहब के
शिष्य पूज्य विमलकीर्तिविजयजी म. साहब के
शिष्य आचार्य हंसकीर्तिसूरि

प्रथम आवृति नकलः

वि. सं. २०७१, शाशनस्थापना दिन
तारीख : ६-५-२०१७

मूल्यः 20/-

डीझाइन :-
आगम क्रिएटीव
नारणपुरा, अहमदाबाद-३८००१३.
मोबाईलः 93777 06565

मुद्रक :
नवरंग प्रिन्टर्स
अहमदाबाद -
मो. 9428 500 401

पुस्तक के निर्माण का कारण

तपोवनो में और शिबिरों में कि जहाँ पर अधिकांशतः लडके ही होते हैं । वहाँ पर

' भूलो भले बीजु बधुं मा-बाप को भूलना नहीं ' इन पंक्तियो के माध्यम से माता-पिता के अनगिनत उपकारो का बालकों को स्मरण करा करके उन्हें हम----

' मम्मी-पप्पा ये घर मे रहने वाले जीते जागते भगवान हैं '

इसी बात को आगे करके उपकारी माता-पिता की सेवा ही नहीं परंतु चरण प्रक्षालन तथा पूजाकरने की बात और उनके ऋण से मुक्त होने के लिए एक पुत्र होने के नाते आपकी क्या फर्ज है उनसभी बातों को क्रमशः समझाया करता हुँ परंतु ...

' संतान को भूलना नहीं ' विषय के ऊपर जग जाहीर प्रवचनो मे कि जहाँ पर मम्मी-पप्पा, दादा-दादी तथा बडे बुजुर्गो की संख्या ही अधिक होती है वहाँ पर

' भूलो भले बीजु बधुं संतान को भूलना नहीं '

गीत की कडियों के आधार पर माँ-बाप कोउद्देशित करके उनको हम मात्र जन्मदाता ही नहीं बल्की जीवनदाता और संस्कारदाता बन करके बालकों का घडतर करने की बात करते रहते हैं ।

संतानों के घडतर की शुरुआत कहाँ से करनी चाहीये ? कौन कौन सी सावधानी रखनी ? 'अ' ग्रेड का सच्चा माता-पिता बनना हो तो तुम्हारे में क्या लक्षण होना आवश्यक है ? आदि अनेक बातों का मार्गदर्शन इस पुस्तक के माध्यम से गुरु कृपा से देने का प्रयत्न किया गया है ।

भारतीय संस्कृति प्रेमी और संस्कार प्रेमी प्रत्येक माता-पिता को अपनी संतानों को इंसान ही नहीं परंतु महान भी बने और उससे आगे बढकर भगवान बनने तक के गुणों का संतानो के जीवन में प्रवेश हो ऐसी इच्छा अवश्य ही रखते हैं ।

इस पुस्तक के माध्यम से संस्कृति प्रेमी और संस्कार प्रेमी प्रत्येक माता-पिता अपनी संतानों का संस्करणशुरु करें और नये इतिहास का सर्जन करने वाले नररत्नो और नारीरत्नों को समग्र विश्व को भेंट करें जिससे इस पुस्तक का लिखना सार्थक हो । जिनाज्ञा के विरुद्ध अगर कुछ भी लिखा गया हो तो उसके लिए अंतःकरण से हार्दिक मिच्छामि दुक्कडम् ।

तपोवन संस्कारपीठ
सं. शाशनस्थापना दिन
तारीख : ६-५-२०१७

-गुरुमैया पादपद्मरेणु
आचार्य हंसकीर्तिसूरि

दोनो तपोवनों में गर्मी की छुट्टियों में दो संस्कार शिबिर

इन दोनों शिबिरो में बालकों को अवश्य भेजें

बालकों की मनपसंद, वैविध्य युक्त, इनामों से भरपुर अनेकों खेल–कूदऔर स्पर्धाओं का आयोजन, तूफानी बालको को होशियार और सज्जन बनाने वाली, अप्रैल और मई के महिने में होने वाली – हाउसफुल रहने वाली जीवन परिवर्तक शिबिर ।

जैन युवानों के लिए १००% नौकरी की गारंटी देने वाली आचार्यदेव श्रीमद् विजय

प्रेमसूरीश्वरजी संस्कृत पाठशाला

किशोरो, तरुणों, युवानों

इस संस्था से आज ही जुड जाइए और पाठशाला के बालको तथा साधु–साध्वीजी को पढाने वाले पंडितजी बनने के बाद तुरंत ही नौकरी में लग जाइये ।

संपर्क सूत्रः आयोजक पूज्य आचार्य भगवंत श्री जितरक्षितसूरीश्वरजी म. साहब, तपोवन उपाश्रय, मु. अमीयापुर, पो. सघड, जि. गांधीनगर फोन :– २३२७६९०१

विद्यार्थियों के लिए रहने खाने आदि की सुविधा सम्पूर्ण निःशुल्क है ।

तपोवन में अभ्यास करने का आजीवन अमूल्य फायदा

• तपोवन में बालक को भेजने से टी. वी. इंटरनेट मोबाइल फोन, वीडियो गेम तथा बाहर से आने वाली सभी कुप्रवृत्तियाँ STOP हो जाती हैं। • प्रभुभक्ति, जीवनमैत्री, विजय, विवेक,सदाचार जैसे अनेक गुण बालक के मानसपटल पर POST हो जाते हैं । • शिक्षण, संस्करण तथा पर्सनालिटी डेवलपमेंट द्वारा विश्व के विविध क्षेत्रों में बालक ऊँचा SPOT हो पहुंच जाता है। • बालक खामेमि, मिच्छामि और वंदामि मंत्र को धारण करके समतावान अने गुणवान बन जाता है। • बालक चलेगा, भायेगा और अच्छा है मंत्र को धारण करके जीवन में अनूकूलता और प्रतिकूलता सेविचलित नहीं होगा ।

तपोवन अे ज तरणोपाय

" भूलो भले बीजू बधु संतान ने भूलशो नहीं ...
अगणित छे फरजो तमारीं ए कदी विसरशो नहिं "

तीन प्रोफेसर की पत्नियाँ एक पार्टी में इकट्ठी हुयीं । पार्टी शुरु होने में थोड़ी देर थी इसलिए टाइम पास करने के लिए उनमें से एक बोली ... आज हमलोग हमारे पति कैसे हैं ? इस विषय पर चर्चा करेंगी । उसकी शुरुआत मैं करती हूं । मेरे हसबन्ड भूलक्कड़ ... एकवार की बात है कोलेज से घर आने के लिए निकले हुए हमारे पति सोसायटी मे हमारे घर से थोड़े आगे निकल गए । प्रतिदिन समय से आने वाले मेरे पति को देर क्यों हुई यह जानने के लिए मैं घर से बाहर आई तो देखा कि हमारे पति हमारे घर से दश घर आगे निकल गये थे मैने उन्हें जोर से आवाज देकर बुलाया तब उनको पता चला कि मैं तो अपना घर ही भूल गया हूँ । थोड़े में कहा जाय तो हमारे पति सोसायटी में बना हुआ अपना घर ही भूल गए थे ।

अब बताओ सखी ! तुम्हारे पति कैसे ? ... दूसरे प्रोफेसर की पत्नी कहने लगी, हमारे पति तुम्हारे हसबन्ड से भी ज्यादा भुलक्कड़ ... उनके पैर में फेक्चर होने से हाथ में एल्युमीनियम की एक मजबूत स्टिक का सहारा लेकर चलना पडता है तभी उनका बैलेन्स बना रहता है।

प्रतिदिन का कार्य हैं कि घर की पहली मंजिल की सीढी पर चढते समय लकड़ी की आवाज जैसे ही आती है मै सीधे रसोईघर में जाकर कड़क मसालेदार चाय बनाकर लाती हूँ उसी दरम्यान वे भी लकड़ी को दरवाजे के पीछे खड़ी करके कोलेज के काम से थके हुए मूडलेस होकर सोफा पर बैठे होते हैं... जैसे मैं लो चाय आ गई पी लो कहती हूँ कि तुरन्त ही चाय पीने के बाद एकदम से मूड में आ जाते हैं । फ्रेश होकर फिर बात करने की शुरुआत करते हैं... बोल आज शाम को घूमने के लिए कहाँ चलना है? एक दिन ऐसा हुआ कि, जैसे ही लकड़ी की आवाज आई कि, मै रसोई में चाय बनाने गई और चाय बनाकर कप-रकाबी लेकर सोफा के पास आई तो देखा कि सोफा पर लकड़ी पडी हुई है मैने सोचा कि अभी आयेंगे कहीं टट्टी-पेशाब के लिए गये होगें । थोडी देर तक राह देखी परन्तु जब न देखा तो खोजना शुरु किया तो शौचालय में हमारे हसबन्ड थे ही नहीं । खोजने पर मालूम हुआ कि लकडी को सोफे के ऊपर रख करके वे दरवाजे के पीछे जाकर लकड़ी की जगह पर खडे थे। मैने कहा, क्यों प्रोफेसर साहेब ! आप दरवाजे के पीछे खड़े हो यह तो लकड़ी खड़ी करने की जगह है और तब हमारे प्रोफेसर साहेब को याद आया कि ... ओह सीट!... मुझे तो सोफा पर बैठना चाहिए था यह तो मै भूल ही गया । थोड़े में कहा जाय तो मेरे पति दरवाजे के पीछे लकड़ी की जगह पर खुद खड़े हो गये यह उनका भुलक्कड़पन है ।

बताओ सखी, अब तुम्हारे पति कैसे ? और तीसरी जो बाकी थी उसने कहना शुरु किया ... तुम्हारे दोनो की अपेक्षा कहीं अधिक भुलक्कड़।

मेरे पति जब कोलेज जाते हैं तब शूट-बूट में अप डेट तो रहते ही हैं परन्तु ऊपर से कोट अवश्य पहनते हैं तभी कोलेज में लेक्चर देने में उनका मूड बना रहता है । एक दिन घर में साफ सफाई करते समय मेरी नजर खूँटी ऊपर टंगी हुई कोट पर पड़ते ही मैने विचार किया कि प्रोफेसर साहब आज कोट पहनना ही भूल गये । कोई बात नहीं अभी तुरंत ही तो निकले हैं १००-२०० कदम ही दूर गये होंगे चलो मैं ही कोट लेकर दौड़ती हूँ और कोट लेकर दौड़कर जल्दी से उनके आगे पहुँच कर मौन पूर्वक उनके सामने कोट रख दिया तो तुरंत ही उन्होने मुझसे

पूँछा,बहन आप कौन हो ? तुमको कहीं देखा है ऐसा लगता है । तब मैने कहा मै तुम्हारी फियान्सी मुझे ही भूल गये !!!

संक्षेप में कहूँ तो शादी को हुए १५ वर्ष हो गए और मुझे ही एकबार इस प्रसंग में भूल गए ... यह सुनकर हम तीनो सखियाँ पेट पकड़कर हँसने लगीं ।

भूलक्कड़ प्रोफेसरों की हँसाने वाली बात सुनकर आपको भी हँसी आवे ऐसी है परन्तु यहाँ पर बैठे हुए सभी मम्मी-पप्पा जो एक अमूल्य चीज भूल गए हैं वह जानकर हँसी तो नहीं आएगी परन्तु दुःख की अनुभूति अवश्य होगी ऐसी है ।

बताये देता हूँ, मम्मी -पप्पा की उस भूल को !! सुन लो ... जो मम्मी-पप्पा अपनी संतानों को भूल गए हों तो यह उनकी सबसे बड़ी भूल है ।

हाँ, मेरी यह बात सुनकर आप सभी लोग शायद ऐसा कहोगे कि मैं अपनी संतानो को भूला ही नहीं हूँ ... मेरी संतानें तो हमारी आँख की पुतली के समान हैं । उनको जो कुछ भी चाहिए वह सब तुरन्त ही लाकर हम दे देते हैं । उन्हें हम हररोज समय से स्कूल भेजने जाते हैं । उन्होनें होमवर्क किया है कि नहीं उसकी देख-रेख रखते हैं । उन्हें अच्छा-अच्छा खिलाते हैं , पिलाते हैं , पहनाते हैं और कभी-कभी बाहर घुमाने के लिए भी ले जाते हैं और उनका पर्सनालिटी डेवलपमेंट(व्यक्तित्व विकास) भी अच्छी तरह से हो उसके लिए विना भूले बार-बार सब कुछ करते रहते हैं तो फिर हम सन्तानों को भूल गये हैं ऐसा कैसे कहा जाय ?

सन्तानों को भूल जाना मतलब क्या ?

सन्तानों को भूल जाना अर्थात् गर्भ से संतान का संस्करण न करना

चलो, पहले इस मुददे पर अब चर्चा करते हैं ...

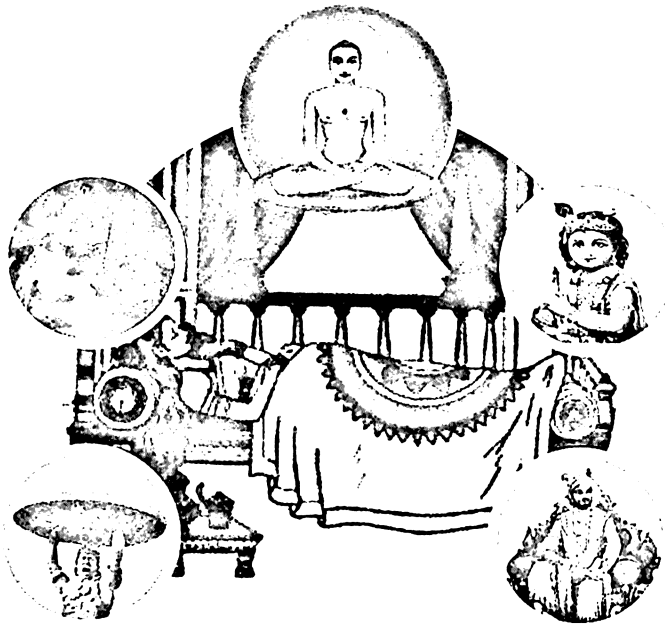

संतान ने घड़वानी आशा आपीं तमने ईश्वरे तो गर्भ थीं घड़तर करो ए वात कदीं भूलशो नहीं ।

आर्य संस्कृति में समझदार और संस्कारी माताओं को पता चल जाता है कि उनके पेट में संतान का आगमन हो गया है तो तुरन्त ही उस सन्तान के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण का कार्य गर्भ से ही शुरु कर देती हैं ।

सबसे पहले तो ब्रह्मचर्य का पालन करना शुरु कर देती हैं । क्यों कि संस्कारी माता को ख्याल ही होता है कि इस स्थिति में यदि मैं ब्रह्मचर्य का पालन नहीं करुँगी तो मेरे गर्भस्थ शिशु पर उसकी ऐसी खराब असर पड़ेगी कि वह पैदा होने के बाद दुराचारी होगा ।

मात्र ब्रह्मचर्य पालन से ही काम नहीं चलता बल्कि टी.वी. मोबाइल आदि के ऊपर भी गन्दे दृश्यों को न देखें । टेलीविजन के पर्दे पर आने वाले दृश्यों की भी गर्भस्थ शिशु

के ऊपर कैसी असर होती है उसका एक दिलचस्प उदाहरण अभी हाल ही में तुम्हारे समाचार पत्रों में प्रगट हुआ है ।

एक गर्भवती स्त्री ने त्रिदेव नामक पिक्चर देखा और उसे खूब अच्छा लगा । परन्तु उसे ध्यान ही न रहा कि इस स्थिति में उसे टी,वी नहीं देखना चाहिए । आपको जान करके आश्चर्य होगा कि उस गर्भवती महिला ने त्रिदेव पिक्चर ३० बार देखा । परन्तु जब बालक का जन्म हुआ तब लोगो ने सुना कि उसका रोने का स्वर बदला हुआ था । वह उवां-उवां की जगह ओये-ओये ... ओये ... की आवाज में रोता था ।

गर्भ से ही संस्करण को सफलता की शील्ड दिलाने वाला एक ऐतिहासिक सत्य दृष्टाँत आप को बता रहा हूँ ।

माँ जीजाबाई के पेट में संतान का आगमन हुआ और उसी समय औरंगजेब नामका मुसलमान आततायी बादशाह भारत में प्रवेश करके मूर्तियों और मन्दिरों का खंडन करता था और हिन्दुओं को मार-मार करके मुसलमान बनाने का काला काम भी करता था तभी भारतभूमि कि इस गौरववंती नारी जीजाबाई का खून खौल उठा उसने अपनी दुःखद वेदना को व्यथित हृदय से अपने गुरु कोंडदेव को बताते हुए कहा, गुरुदेव ! इस आततायी का अत्याचार अब सहन नहीं होता क्या करु ? मैं मेरे गर्भ में पल रहे बालक में क्या वैसा श्रातन प्रगट करा सकती हूँ ? और गुरुदेव ने बहुत अच्छा उपाय बताया । जीजामैया ! आपने बहुत अच्छा विचार किया है । तुम आज से ही रामायण के आरण्यकान्ड का पारायण करना शुरु कर दो । जरुर उसकी ज्वलंत असर गर्भस्थ शिशु के ऊपर पड़े बिना नहीं रहेंगी और वह कार्य शुरु हो गया । गर्भ में छठे महीने से लेकर बालक शिवाजी को लगातार जबतक आठ वर्ष के नहीं हुए तब तक आरण्यकांड का पाठ सुनाया ।

एकबार की बात है , माता-जीजाबाई बालक शिवाजी को आरण्यकांड का पाठ सुनाते हुए बता रहीं थी कि बेटा ! जंगल में एक तरफ ऋषि-मुनि यज्ञ कर रहे थे तो दूसरी तरफ हवन की समग्री पड़ी हुई थी और पीछें के भाग में हड्डियों का बहुत बड़ा ढेर लगा हुआ था । वन-वन विचरण करते हुए श्री रामचन्द्रजी घूमते-घूमते वहाँ आ पहुचते हैं । हाँ माँ, फिर क्या हुआ? अब समझदार शिवाजी की जिज्ञासा बढने लगी । बेटा ! फिर श्री रामचन्द्रजी ने भी उस दृश्य को देख करके ऋषि-मुनियों से सवाल किया कि हे ऋषि-मुनियों ! आप यज्ञ की पवित्रतम क्रिया कर रहे हो तो आपके आश्रम के पीछे हड्डियों का ढेर कैसे लगा हुआ है ? यहाँ पर

इतनी अपवित्रता क्यों ?

ऋषिगण कहने लगे, हे शूरवीर राम ! आप की बात सत्य है परन्तु हम क्या करें ? हम लोग लाचार हैं । असुर लोग आ करके यज्ञ करने वाले अनेक ऋषियों को मार देते हैं । जब एक महात्मा मर जाता है तब उसके स्थान पर दूसरा महात्मा यज्ञ करने के लिए आकर बैठ जाता है । जब दूसरे ऋषि की भी हत्या हो जाती है तब तीसरा महात्मा आकरके यज्ञ करने लग जाता है । असुर लोग इन महत्माओं का खून पी जाते हैं और मांस खा करके हड्डियों को आकाश में जाकर नीचे आश्रम में फेंक देते हैं । उन्हीं महात्माओं की हड्डियों का यह ढेर है । इन असुरों ने हमारे पूर्वजों को मार दिया है फिर भी हम लोग हिम्मत करके यज्ञ के इस पवित्र कार्य को आगे ही आगे उत्तरोत्तर बढाते जा रहे हैं । श्रीरामचन्द्रजी इस बात को सुनकर काँप उठते हैं हे महात्माओ, अब आप लोग निश्चिन्त होकर यज्ञ करें घबडायें नहीं मैं असुरों को मार करके यहाँ से भगा करके ही रहूँगा । कहते-कहते जीजामैया थोड़ा रुक जाती हैं तभी...

माँ ! फिर क्या हुआ ! क्या श्रीरामजी ने असुरों का संहार कर दिया ? शिवाजी उत्कंठा से पूँछते हैं ।

हाँ बेटा ! फिर श्रीरामजी ने धनुष का टंकार किया । कुछ राक्षस तो धनुष के टंकार को सुनकर ही भाग खड़े हुए तो कुछ श्रीरामजी की ऊर्जा के प्रभाव से उनके पास न आ सके और जो सामने आए उनको बाणों से बेध दिया इस तरह से महात्माओं का उत्तरसाधक बन करके श्रीरामजी ने उनके यज्ञ की रक्षा की और राक्षसों का संहार किया ।

इस बात को सुनकर बालक शिवाजी के अन्दर शौर्य प्रगट हुआ ... माँ ! मुझे भी राम बनना है । माँ तु ही मुझे बता कि कोई ऐसा आततायी असुर आज भी है ? कि जिसको मैं मारकर राम बन सकूँ ।

शिवाजी के मुख से अपने स्वप्न को साकार करने वाली शौर्य युक्त वाणी को सुन करके जीजामाता की आँखों में हर्ष के आंसू भर आए । वे बालक शिवा से कहती हैं कि बेटा ! आज भी एक ऐसा असुर है । जिसका नाम औरंगजेब है । जिसने हिंदुओं के विनाश का काम शुरु कर दिया है । यदि हम लोग उस पर कब्जा नहीं करेंगे तो बेटा! अपनी जाज्वल्यमान संस्कृति समाप्त हो जायेगी और ... ।

एक दिन यही शूरवीर बालक बड़ा होकर औरंगजेब को परास्त किया और उसका

नाम छत्रपति शिवाजी हुआ ।

ऐसा कहा जाता है कि यदि शिवाजी पैदा न हुए होते तो शायद आज तुम्हारा नाम महंमद अथवा सुलतान होता और तुम्हारे दादा का नाम हुसेन अथवा अलीबाबा होता । और आपके बेटे का नाम रजाक अथवा सलीम होता ।

यदि माता-पिता संस्कारी हैं और गर्भसंस्कार ऊपर आत्मविशवास वाले हैं तो बालक गर्भ में आ गया है उसकी जानकारी होते ही यदि मम्मी-पप्पा जैन हैं तो सवा लाख नवकार जाप, नवस्मरण पाठ, देव-गुरु की सुन्दर भक्ति, तीर्थ यात्रा आदि सुन्दर सदाचारी जीवन जीना शुरु करें ।

अजैन माता-पिता हों तो रामायण - महाभारत - गीता वांचन ,ईश्वर स्मरण , महापुरुषों और महासतियों के चरित्र का वांचन करें ।

वस्तुतः तन का बंधारण और मन के संस्करण का कार्य गर्भकाल से ही शुरु हो जाता है । जिसका समय गर्भ के नवें महीने से लेकर आठवें वर्ष तक होता है इस समय में संतान एकदम कोरी स्लेट जैसी होती है । बालक इतना ज्यादा निर्दोष होता है कि इसीलिए उसके लिए कहा जाता है कि

Child is the Father of God ! बालक तो भगवान का भी पिता है

मुझे इस समय संस्कार प्रेमी और धर्म प्रेमी नचिकेता के माता की याद आती है कि जिस माता ने गर्भ में बालक की खबर पड़ते ही .....।

प्रतिदिन पन्द्रह मिनट तक ध्रुवतारा को स्थिर दृष्टि से देखा करती थी कारण कि उसे खबर थी कि ऐसा करने से बालक चंचल मन का नहीं बल्कि स्थिर मन वाला होगा ।

कभी कभी भरती वाले सागर के घुघवाट को सुना करती थी । कारण कि अपने बालक को सागर जैसा गंभीर बनाना चाहती थी ।

माता दररोज बाल सूर्य का दर्शन किया करती थी कारण कि अपने होने वाली संतान को तेजस्वी बनाना चाहती थी।

अपने पति के साथ सदाचारी और ब्रह्मचर्य युक्त जीवन जीती थी कारण कि अपने बालक को सदाचारी और पवित्र बनाना चाहती थी ।

तीर्थयात्राओ तथा धार्मिक स्तोत्रो के साथ रामायण, महाभारत, गीता जैसे ग्रन्थों

का तथा परमात्मा के पवित्र जीवन का वांचन करती थी कारण कि वे अपने बालक को धर्मात्मा बनाना चाहती थी ।

खाने-पीने में, उठने-बैठने में, माता इतनी सावधानी रखती थी उसके पीछे उसका एकमात्र उद्‌देश्य उनका बालक धर्मप्रेमी, संस्कृतिप्रेमी और राष्ट्रप्रेमी बन करके उनकी कोख को उज्ञवल बनावे यही था ।

और एक दिन गर्भकाल पूर्ण होते ही इस माता ने एक तेजस्वी बालक को जन्म दिया । जन्म के समय ही उस बालक की मुखाकृति और शरीर सौष्ठव देखने के बाद ऐसा लगता था कि बालक भविष्य में महान बनेगा ही । योग्य समय आने पर उसका नचिकेता नाम रखा गया ।

यह माता एक ऐसी माता थी जो अपने बच्चे की मात्र **जन्मदाता** बनना ही नहीं चाहती थी बल्कि साथ साथ **जीवनदाता** और **संस्कारदाता** भी बनना चाहती थी और यही कारण है कि नचिकेता आठ वर्ष की उमर तक उसके शरीर का सुन्दर घड़तर करके एक **हेल्थ बिल्डिंग** का सुन्दर निर्माण करने के बाद अब उसने **केरेक्टर बिल्डिंग** के निर्माण का भी प्रयत्न चालू कर दिया था ।

एक समय की बात है वैराग्य शतक और इन्द्रिय पराजय शतक का अभ्यास करते हुए नरक की बात आयी... **संसार के क्षणिक सुखों में आसक्त जीवो मन जितना पाप बाँधते हैं और उसमें मजा लेते हुए नरक के कातिल दुःखों की सजा जीवों को भोगनी पडती है।** इस बात को जानते ही नचिकेता की आत्मा काँप गयी । उसने तुरंत ही अपनी माता से कहा, माँ मुझे नरक में जा करके नरक देखनी है । बेटा ! नरक में जाने के लिए तो यमराज की आराधना करनी पड़ती है।

फिर यमराज जब प्रसन्न हो करके तुम्हें बरदान माँगने के लिए कहें तब तुम बरदान माँगना तभी तुम्हारी इच्छा पूर्ण.होगी । माँ ! इसके लिए मुझे क्या करना होगा ? कौन सी साधना करनी होगी तु जो भी कहे वह सब करने के लिए तैयार हूँ । मुझे तो सिर्फ नरक देखना है ।

बेटा ! मैं तुम्हें जो मन्त्र देती हूँ उस मन्त्र को कण्ठस्य करकें नगर के बाहर स्थित यमराज मन्दिर में जाना और यमराज की मुर्ति के सामने दृढ संकल्प करना कि,. हे **यमराज आप जब तक प्रसन्न नहीं होंगे तब तक अन्न–जल का त्याग करके आप का जाप करता रहूँगा । बेटा ! कसोटी होगी कई दिनों तक भूखा–प्यासा रहना पड़ेगा । परंतु बेटा ! तुम्हें मेरा आर्शीवाद है कि नरक देखने की**

इच्छा को पूर्ण करने की साधना में तुम्हें ज्वलंत सफलता मिलेगी ।

बस, माताजी ! आशींवाद दे दो मैं कल से ही इस साधना की शुरुआत करता हूँ । मुझे आपके आशींवाद में पूर्ण श्रद्धा है ।

और दूसरे ही दिन से साधना शुरु हुई । माँ के कहने के अनुसार सभी विधि की गई और चमत्कार हुआ , तीन दिन का उपवास पूर्ण हुआ चौथे दिन प्रातःकाल चार बजे ही बालयोगी नंचिकेता की पवित्र उर्जा से यमराज का सिंहासन डोलने लगा । यमराजजी ने भी मूर्ति मे से तुरंत प्रगट होकर नचिकेता के सामने आकरके कहा बोल बेटा ! तुम्हारी साधना से मैं प्रसन्न हूँ माँग-माँग तुझे क्या चाहिए ? अँधेरे में तेजस्वी आकृति वाले यमराजजी की आवाज को सुन करके बालयोगी ने तुरन्त ही अपने सामने खड़े हुए यमराजजी के चरणों में पड़कर कहा । नमस्कार ! यमराजजी मुझे नरक देखना है । मुझे नरक दिखाओ । तब यमराजजी ने कहा नचिकेतो ! नरक मानुप्राक्षि । हे नचिकेता , नरक कोई देखने जैसी वस्तु नहीं है नरक मे तो भयानक आवाजे आती रहती हैं और मार-काट चालू रहती है । वहाँ के भयानक और डरावने दृश्यों को तू देख नहीं सकता । बेटा ! अगर तुम्हें देखना है तो देखने योग्य स्वर्ग के दृश्य हैं । वहाँ के हीराजडित विमान, अप्सरा जैसी रुप-रुप की अम्बार देवियाँ, सुन्दर सुहावने बाग-बगीचे, तालाब,अतिअद्‌भुत गीत-संगीत के साथ चल रहे नाटक और नृत्य । नरक देखने की इच्छा तु छोड़ दे, तु अभी बहुत छोटा है, डर जायगा । नहीं नहीं यमराजजी ! ! मुझे तो नरक ही देखना है । यदि आप मेरी साधना से प्रसन्न हैं तो मुझे जल्दी से जल्दी नरक की दुनियाँ में ले चलो । मुझे नरक बताओ ।

बचन से बंधे हुए यमराज ने बालक नचिकेता को अपने कंधे पर बैठा करके अपनी दिव्यशक्ति से क्षणमात्र में ही नरक की अंधेरी दुनियाँ मे ले गये और अपने तेज से यमराजजी ने उसे नरक का दर्शन कराया ।

भयंकर दुर्गन्ध की दुनियाँ में रह रहे नरक के जीव आर्त स्वर से चिल्ला रहे थे..... बचाओ....बचाओ.... बचाओ ....। ओ मम्मी ! ओ पप्पा ! तुम कहाँ चले गये। मुझे रात में दूध पिलाने वाले ,अभक्ष्य खान-पान कराने वाले अब आप मुझे इस दुःख मे से बचाने के लिए क्यों नहीं आते । ओ..... ओ ..... ओ ..... । मुझे मार डालो, मुझे यहाँ नहीं जीना है..... मुझ से यह दुःख सहन नहीं होता ..... मुझे पानी दो ..... मुझे बहुत प्यास लगी है..... ।

लो बेटा यह पानी, गिलास में भरा हुआ सीसा का गरमागरम रस बता करके परमाधामी राक्षस जैसे भयंकर देव उन नरक के प्यासे जीवों को जैसे ही वह रस पिलाने जाते हैं वैसे ही छलाँग लगा कर नरक का जीव भागने जाता है परंतु दूसरे ही क्षण छलांग मार करके नरक के जीव को गले से पकड़ करके वे राक्षस जैसे देव कहते हैं नालायक ! ना कर रहा है... नरक की दुनियाँ का यह पानी तुझे पीना ही पड़ेगा । याद कर..... याद कर... मानवभव में तुझे दारु पीने में , कोकाकोला, फेंटा ,थम्सअप जैसे अभक्ष्य पेय पदार्थो को पीने में बहुत मजा आता था। ले ले अब उसी पाप की सजा भोग और जबरदस्ती उसे गरमागरम उबलते हुए सीसे का रस पिलाते ही करुण आक्रन्द करके बेचारा नरक का जीव गिर पडता है और बेहोश हो जाता है । थोड़े ही समय में जब होश आता हैं और भागने जाता है तभी वही राक्षस जैसा देव फिर से आ करके उसे गरमागरम लोहे की पुतलियों को भेंटने के लिए कहता है तभी भागते हुए उस जीव को पकड़ करके जबरदस्ती गरमागरम पुतलियों से लिपटाते ही जोर से चिल्ला उठता है और करुण कल्पान्त करने लगता है तभी वे देव उसे मानवभव में किए हुए टी.वी. के गंदा दृश्यों को देखना परस्त्रीगमन, वेश्यागमन जैसे पापों को याद करा करके अट्टहास्य करते हैं और कहते हैं बदमाश , तु चाहे जितना रो यहाँ पर तुझे कोई बचाने आनें वाला नहीं है । पाप करने में खुब मजा आती थी । सद्‌गुरु के बचनों की हँसी उड़ाते थे तो भोग ले उन पापों की सजा अभी तो शुरुआत हुयी है । बेटा, ऐसे कातिल दु:खों को तुझे हजारों वर्ष,असंख्य वर्षो तक भोगना है । तैयार रहना नालायक । और आकाश में गर्जना करके अट्टहास्य करते हुए परमाधामी विदा होता है और तभी दूसरा उसका दोस्त उस नरक के जीव की आँख में गरमागरम सुइयों को भोंक करके उसे गंदा पिक्चरों को देख करके आँखो को मजा कराया है ना तो ले भोग उसकी सजा और नरक का बिचारा जीव भयानक आक्रन्द करते हुए वहीं पर गिर पड़ता है ।

नरक की दुनिया के ऐसे कातिल और भयानक दृश्यों को देख खरेखर नचिकेता काँप उठता है । यमराजजी ! आपकी बात सही है । मुझसे हृदय को कँपा देने वाला यह दृश्य देखा नही जा सकता । आप मुझे मेरे घर ले चलो । और यमराज ने क्षणमात्र में ही उसे उसके घर पहुंचाकर पूँछा वत्स, तुमने स्वर्ग के मनोहर दृश्यों को देखने के बदले नरक देखने की ही इच्छा क्यों व्यक्त की और अपनी बात पर अड़े रहे ?

यमराजजी ! जब शास्त्रो के पन्नों पर मैने नरक की बातों को, पापों की भारी सजा

को आदि बातों को पढा तब मुझे ऐसी इच्छा हुई कि जब पापों की ऐसी भारी सजा नरक में भोगनी ही पड़ती है तो अब मुझे मेरे जीवन में तो पाप हमेशा चलते रहते हैं उन्हें बंद कर देना है । कारण कि नरक की इतनी बड़ी सजा मैं भोग नहीं सकता । और सह सकता हूँ ऐसा भी नहीं है आज से ही मैं मेरे जीवन को अधिक से अधिक साधना, आराधना और उपासनामय,पापमुक्त और पवित्र बना देता हूँ । यमराजजी ! आपका खूब-खूब आभार । चरणों में नमस्कार करता है और यमराजजी अपने स्थान को चले जाते हैं ।

मुझे नचिकेता के इस दृष्टांत द्वारा श्रोताओं को यह बात बतानी है कि एक माता यदि चाहे तो बच्चे को कितनी अच्छी तरह से तैयार कर सकती है ।

कुछ वर्ष पहले ही की बात है तारीख २-२-२००६ के दिन गुजरात समाचार में अक्षरमोदी नामके एक आठ वर्ष के बालक की एक सत्य घटना प्रकाशित हुयी थी । यदि आप उस सत्य घटना को पढोगे तो गर्भ से ही बालक के संस्करण की बात सभी लोगों के दिमाग में शतप्रतिशत बैठ जायगी ।

आठ वर्ष के अक्षरमोदी को रामायण,महाभारत सहित संस्कृत ग्रंथो के अनेक श्लोक कण्ठस्थ हैं

मिलने योग्य केवल बड़े लोग ही होते हैं ऐसा नहीं हैं । गोलियों और भंवरा खेलने की उमर में आठ वर्ष के अक्षर मोदी को यदि कोई सामान्य व्यक्ति भी मिले तो पहली नजर में उसे देखने से ऐसा लगता है कि इस छोटे से बच्चे में जो बड़े व्यक्तियों में न हो ऐसी तेजस्वी क्षमता क्या होगी ? सहज काली-घेली भाषा, गौरवर्ण,चेहरे पर विशुद्ध सरलता और निर्दोषता ! इससे भी आगे शहर की एक प्रख्यात अंग्रेजीमाध्यम स्कूल में चौथी कक्षा में पढे अर्थात् भाषा में अंग्रेजी का प्रभाव देखने को मिले । परन्तु आश्चर्य तो इस बात का है कि इस बालक अक्षर शैलेशभाई मोदी को जब ६ वर्ष का था तभी से श्रीमद्भागवत के अंश,गीता,पुराणों ,तुलसीदास के दोहे और चौपाइयाँ ,स्वामी नारायण संप्रदाय की साखियाँ,संस्कृत के सुभाषितों इस तरह से लगभग ३४० से भी अधिक श्लोक कंठस्थ हैं । पिछले तीन वर्षो से अक्षरमोदी को महाभारत की संपूर्ण कथा याद है । आप उससे महाभारत जैसे बृहदग्रंथ के कोने-कोने में से कोई भी प्रसंग पूँछो तो एक अनुभवी विद्वान की तरह सम्पूर्ण प्रसंग समझा करके कहता जाता है । अक्षरमोदी से कोई पूँछे कि अश्वत्थामा कौन था ? तो अक्षरमोदी हाथ के हाव-भाव के साथ संपूर्ण

कथा को अथ से इति तक कहता है । अश्वत्थामा हिमालय के जंगलों में भटक रहा है इस लोकमान्यता को बताना भी नहीं भूलता है ।

यत्र योगेश्वरो कृष्णः, यत्र पार्थो धनुर्धरः
तत्र श्रीविजयोभूतिः , ध्रुवो नीतिर्मतिर्मम् ।।

यह अक्षर का प्रिय श्लोक है । ६ वर्ष की अवस्था से ही यह छोटा सा अक्षर इन कठिन श्लोकों को कैसे याद कर सका ? इस प्रश्न का सच्चा जवाब उसकी एम,ए, बी,एड की हुयी माता चेतना बहन कहती हैं कि अक्षर का जन्म होना था उससे पहले ही महाभारत,शिक्षापत्री,गीता,रामायण और श्रीमद्भागवत इन सभी ग्रंथो को तथा शिवाजी और राणाप्रताप जैसे उत्कृष्ट वीरों की कथाओं को रस पूर्वक पढती थी । जन्म के बाद अक्षर जब समझदार हुआ तब मै और मेरे पति धार्मिक तथा पौराणिक प्रसंगो को उसे सुनाते थे इस तरह से बचपन से ही उसमे संस्कार का बीजारोपण हुआ ।

जिस जाहेर सभा में बोलते समय अच्छे-अच्छे लोग गेंगें-फेफे हो जाते हैं वहीं पर अक्षरमोदी स्वामीनारायण की सभाओं में किसी धुरंधर वक्ता की तरह संकोच किए बिना बोलता है ।

अहमदाबाद के शाहीबाग अक्षरपुरुषोत्तम मंदिर में पूज्यश्री प्रमुखस्वामी महाराज जब टहलते रहते हैं तब उनके साथ ही चलते हुए अक्षर श्लोकों तथा साखियों को स्पष्ट उच्चारण के साथ आपश्री को सुनाता है । एक बार तो प्रमुखस्वामीजी महाराज बोल उठे कि, अकेला हजारों के बराबर है ! बहुत बलवान है! वाह, कितना स्पष्ट बोलता है! अक्षर ने वार्ताकथन, स्पोर्टस, गीतगुंजन तथा अन्य प्रवृत्तियों में संख्याबंध प्रमाणपत्रों तथा मेडल्स को प्राप्त किया है । इस अदभुत बालक के विषय में बात करते हुए अक्षर के पिता शैलेषभाई मोदी कहते हैं कि, **अक्षर में आत्मविश्वास बहुत है । वह कभी भी टी,वी, नहीं देखता, चोकलेट नहीं खाता, तथा तमाम एकादशी को व्रत करता है । भविष्य में जन सेवा के लिए डॉक्टर बनने की उसकी महेच्छा है । है तो खूब छोटा परन्तु यह आठ वर्ष का बालक अक्षर बचपन से ही कोई बड़ा व्यक्ति भी मुँह में अंगुली ड़ाल ले ऐसी अद्भुत तेजस्विता को धारण करता है।**

आर्य संस्कृति के प्रत्येक संस्कारप्रेमी माता-पिता को इतना ख्याल तो होना ही चाहिए कि, गर्भाधान यह पेट में सन्तान को गुणवान, रुपवान और स्वरुपाधान

बनाने का एक सुनहरा अवसर है । उस समय में हुई भूल का भोग बिचारे संतान को तो बनना ही पड़ता है परन्तु उस भूल के बदले में माँ-बाप को भी पीछे पछताना पड़ता है । कुछ वर्ष पहले ही एक युरोपियन गोरे दंपति के यहाँ काली चमड़ी वाले एक हबसी जैसे बालक का जन्म हुआ । गोरे पति को गोरी पत्नी के चरित्र पर शंका हुई । पति ने कोर्ट में केस किया । होंशियार न्यायमूर्ति महोदय ने न्याय करने से पहले उसके बंगले में उसके शयनखंड का निरीक्षण किया । और बुद्धिशाली जज महोदय ने कारण पकड़ लिया । तुरंत ही उन्होंने उस गोरे पति से कह दिया कि तुम्हारी पत्नी बिल्कुल निर्दोष है । केवल मुझे तुम्हारी पत्नी से एक प्रश्न पूँछना हैं कि रात में गर्भधान के समय तुम्हारी नजर शयनखंड में लगे हुए इस कालिया हब्सी के सामने थी क्या ? और गोरी कन्या को जज की बात स्वीकारनी ही पडी । बुद्धिशाली गोरा पति भी अपने काली चमड़ी वाले हब्सी जैसे बालक के जन्म का कारण जान करके शांत हो गया ।

माता-पिता के पवित्रता की, माता-पिता के सदाचारी जीवन की असर संतान के ऊपर कैसे पड़ती है उसको जानना,मानना और समझना हो तो सुनो अजैन रामायण का एक सुंदर प्रसंग ।

राम-लक्ष्मण और सीता वन में गये हुए हैं । लक्ष्मण तो केवल भाई भाभी की सेवा के लिए ही अपनी पत्नी को साथ लिए बिना ही वन में गये थे । बहुत दिनों और महीनाओं की एकधारी अथक सेवा के बाद श्रीरामचन्द्रजी ने एक दिन लक्ष्मण से कहा, भैया ! आज तो जंगल में से लकड़ियाँ लाने के लिए मैं ही जाऊँगा । तुम्हें आराम करना है । बड़े भाई ! आपको यह काम करना शोभा नहीं देता मैं आपका सेवक बैठा रहूँ और आप इस तरह लकड़ियाँ लेने के लिए जंगल में जाओ यह उचित नहीं है । लक्ष्मण भैया ! उचित है कि अनुचित यह मुझे विचारना है । मेरी आज्ञा है कि तुम्हें कुटीर में ही रहना है । और आज्ञाचक्र के सामने लक्ष्मण को झुकना पड़ा । सुबह ५ बजे के निकले हुए श्रीरामचन्द्रजी ९,१०,११ और दोपहर के १२ बजे तक लकड़ियाँ लेकर क्यों नहीं आए इसी चिन्ता में राह देखते-देखते, लक्ष्मणजी कुटी के बाहर ही जिस दिशा से बड़े भाई आने वाले थे उसी दिशा में मुँह करके बैठे हुए थे वहीं पर एक घटना घटी

घर के काम से थकी हुयी सीतामैया भी कुटी के बाहर आ करके लक्ष्मण के पास बैठ गई । नींद से आँख बोझिल हो रही थी । और थोडे ही समय में सीताजी को नींद आते ही लक्ष्मणजी की गोद में सर रख दिया । लक्ष्मणजी भी थोड़ी देर यह सब

देख करके स्तब्ध रह गये । परन्तु जब ख्याल आया तब भाभी की नींद न बिगडे इस आशय से बिल्कुल हिले-डुले बिना फिर से बड़े भाई की राह देखनें लगे । परन्तु हुआ यह कि पीछे की विरुद्ध दिशा में से श्रीरामचन्द्रजी आ रहे थे । और दूर से कुटी के बाहर का यह विचित्र दृश्य देख करके विचार में पड़ गये । अरे ! यह मैं क्या देख रहा हूँ । यह स्वप्न है कि सत्य ? जो भी हो तुरंत ही श्रीरामचन्द्रजी ने अपनी इस शंका का जवाब लेने के लिए लक़ड़ी के बोझ को पास में रख कर तोते का रुप बना लिया । और जिस विशाल वृक्ष के नीचे कुटी थी उसी वृक्ष की एक ऐसी नजदीक की ड़ाल पर बैठे कि जिससे वे लक्ष्मणभैया को बराबर देख सकें । सीताजी लक्ष्मणजी की ही गोद में घसघसाट सो गई । तभी तोते ने मीठी वाणी में मनुष्य की आवाज में एक श्लोक बोल करके लक्ष्मणभैया से प्रश्न किया ।

पुष्पं दृष्ट्वा , फलं दृष्ट्वा दृष्ट्वा योषित् यौवनम्
त्रीणि एतानि दृष्ट्वैव कस्य नो चलते मनः ।।

हे लक्ष्मण भैया ! सुन्दर खिले हुए सुगन्धित फूलों को देख करके, पके हुए फलो को देख करके तथा सुन्दर रुप वाली स्त्री इन तीनों को देखने के बाद किसका मन चलायमान नहीं होता ?

अचानक तोते के मुँह से श्लोक के द्वारा पूँछे गये प्रश्न को सुनकर क्षणमात्र के लिए आश्यर्य चकित हुए लक्ष्मण ने भी तोते को श्लोक में ही सुन्दर जवाब दिया ।

पिता यस्य शुचिभूर्त माता यस्य पतिव्रता
ताभ्यां जातस्य पुत्रस्य तस्य नो चलते मनः ।।

हे विचक्षण शुकराज ! आप अपने प्रश्न का उत्तर सुनें जिस सुपुत्र के पिता पवित्र हों ओर माता पतिव्रता हो उन दोनों से उत्पन्न संतान का मन इन तीनों वस्तुओं को देखने के बाद भी बिलकुल चलायमान नहीं होता ।

जवाब सुनकर खुश हुए तोते ने अब सीधे-सीधे ही पूँछ लेने के लिए दूसरा प्रश्न श्लोक द्वारा पूँछा ।

अग्निकुण्डसमा नारी घृतकुण्ड समा पुमान्
जानुस्थिता परस्त्री च कस्य नो चलते मनः ।।

हे लक्ष्मणभैया ! इस जगत में स्त्रियों को अग्निकुण्ड की उपमा दी गइ है । और उसके सामने पुरुषो को घी से भरे हुए घड़े की उपमा दी गई है । तो अब इन दोनों

के संपर्क की तरह जब गोद में परस्त्री हो तो ऐसी स्थिति में किसका मन चलायमान नहीं होता । और तोते के रुप में स्थित राम के द्वारा पूँछे गये इस प्रश्न का जवाब भी श्लोक के द्वारा देते हुए लक्ष्मण ने मानो छग्गा मारा हो ।

मनो धावति सर्वत्र मदोन्मत्त गजेन्द्रवत्
ज्ञानांकुशे समुत्पन्ने तस्य नो चलते मनः ।।

हे शुकराज ! आपकी बात सत्य है, परन्तु जो अज्ञानी जीव हैं उनके लिए ही स्त्री पतन का कारण बन सकती है । परन्तु गुरु कृपा से जिसके पास ज्ञान रुपी अंकुश हमेशा साथ में रहता है उस सत्वशाली पुरुष को तो अप्सरायें भी पिघलाने में समर्थ नहीं बन सकती । मैं अपने ज्ञान रुपी अंकुश से विजातीय तत्वों में एक आँख में सरस्वती तथा दूसरी आँख में सगी बहन अथवा माता के दर्शन करता हूँ । इसीलिए इन क्षणों में भी मैं अपने मन को पवित्र और निर्मल बनाए रख सकता हूँ ।

लक्ष्मणजी का अति अद्‌भुत जवाब सुना और गोद में सोयी हुई सीतामैया में भगवती और माताजी के दर्शन करने वाले के पराक्रम से खुश हुए तोता रुपधारी राम ने अपना रुप प्रगट किया । और जैसे ही सामने अपने बड़े भाई रामजी को देखा तो तुरन्त ही लक्ष्मणजी खड़े हुए और रामजी के चरणों में नमस्कार करके रामचन्द्रजीको भेंट पड़े ।

रामचन्द्रजी, लक्ष्मणजी और सीताजी आदि रामायण के पात्रों में जो गुणवैभव दिखाई पडता है उसका एक मात्र कारण गर्भधान और गर्भकाल के समय माता-पिता की सावधानी तथा जन्म के बाद माता-पिता का सुसंस्कारी जीवन ही कारणरुप है ।

संतान को न भूलने वाली माता तो गर्भ से ही बालक को संस्कार देने का कार्य शुरु कर ही देती है परन्तु जन्म लेने के बाद पालने में भी उसके संस्करण का कार्य चालू रखती हैं । महासती मंदालसा और महासती अनुसूया पालने में झुलाते हुए अपने बालकों को हालरड़ा में गा कर कहती हैं:- **शुद्धोडसि बुद्धोडसि निरञ्जनोडसि, संसार माया परिवर्जितोडसि**। अर्थात् हे बेटा ! तु शुद्ध है, तु बुद्ध है , तु इस संसार के माया-मोह से परे है तुझे इस संसार के मायाजाल से छूटकर संन्यास ग्रहण करना है । कभी-कभी बालक पालने में रोता है तो भी माता उस बालक को हालरड़ा के रुप में सुनाते हुए कहती है ।

मृत्युर्बिभेषि किं बालम्,स च भीतं न मुञ्चति ।

अजातं नैव गृह्णाति कुरु यत्नमजन्मनि ।।

हे बालक ! तु क्यों रोता है ? क्या तुम्हें यमराज दिखाई पडते हैं इसलिए रोता है , परन्तु ध्यान रखना वे यमराज तुझे रोने मात्र से कहीं से छोड़ देने वाले नहीं हैं । उनसे निर्भय बनना हो तो बेटा एक ही रास्ता है कि अजन्मा बनने की साधना तु जल्दी शुरु कर दे । कारण कि अजन्मा बने हुए लोगों का यमराज कुछ भी नहीं कर सकते ।

जन्म लेने के बाद बच्चा थोड़ा समझदार हो जाय बोलने लगे अर्थात सबसे पहले मम्मी-पापा, बा वगेरे बोलने लगे तो सबसे पहले उसे नवकार महामन्त्र बोलना सिखावे । उसके बाद मम्मी अथवा पप्पा को ख्याल आ ही जाता है कि अपना बच्चा १,२ बार बुलवाने से ही याद कर लेता है और बोलने लगता है । तब वे माता-पिता उस बच्चे को दो प्रतिक्रमण,पाँच प्रतिक्रमण के सूत्र बुलवा-बुलवा करके कण्ठस्थ करवा देते हैं जबकि अभी तो उसे लिखना पढना भी नहीं आता ।

बारडोली सरदारबाग जैन संघ के हीराचंद नगर में देरासर के सामने ही रहने वाले ऋषभ ट्रेडर्स वाले बबूभाई इस बात के सत्य प्रमाण हैं । उनका पहला बालक तीर्थेश और दूसरा बालक मेघ लिखने पढने से पहले ही पाँच प्रतिक्रमण कण्ठस्थ कर चुका था । इस कार्य में उसके पिता द्वारा की गयी मेहनत ही रंग लाई है । जिनशासन में ऐसे जो माता-पिता हैं वे खूब-खूब धन्यवाद के पात्र हैं ।

बचपन से ही जो बालक पापभीरु और भवभीरु बन जाते हैं उसके लिए घर में बैठे हुए दादा-दादी आदि का भी कभी-कभी महत्वपूर्ण योगदान होता है । दादा और दादी घर में उन संतानो को नरक चित्रावली और सत्कर्म चित्रावली बता करके छोटी उमर से ही कैसे-कैसे पाप की कैसी-कैसी सजा नरक में मिलेगी । कैसे-कैसे सत्कार्य से स्वर्गादि सद्गतियों में कैसे-कैसे दिव्यसुख मिलते हैं यह भी बताते हैं । जिससे बालक-बालिकायें बचपन से ही कुल में कलंक न लगाने वाले पापों से बच जाते हैं । और कुल को उज्ज्वल बनाने वाले कुल-दीपक बनते हैं ।

कभी-कभी तो ये दादा और दादी उन छोटे बच्चों को .....

• जगडूशाह और भामाशाहों की कहानियों को कह करके उन्हें जगडूशाह और भामाशाह बनने की बात करते हैं तो कभी-कभी.....

• महाराजा कुमारपाल के इतिहास को बताने के माध्यम से संदेश देते हैं कि बालको तुम्हें भी महाराजा कुमारपाल जैसा जीवदया प्रतिपालक बनना है ।

• महासती सीता के प्रसंग को सुना करके उन्हें सहनशील बनने की बात करते है ।

• चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह और वीर सावरकर जेसे राष्ट्ररक्षकों की बातों को बता करके दादा अथवा दादी अपने पौत्र-पौत्रियों को हितशिक्षा देते हुए कहते हैं कि बालको, तुम्हें भी ऐसे ही सिंह के समान सत्वशाली बन करके देश की रक्षा करनी है ।

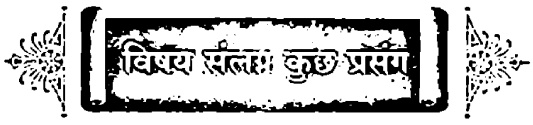

(१)

सम्पत्ति से समृद्ध एक पिता ने अपनी पुत्री को वैसे ही संस्कारों से समृद्ध बनाया है कि हररोज कोलेज में जाने वाली बेटी को पिताजी अपनी चारपहिया गाडी में प्रतिदिन कोलेज छोडने जाते हैं और कोलेज से छूटने के बाद समयसर लेने के लिए भी जाते हैं । यदि कभी पिताजी बेटी को अकेला जाने के लिए कहते हैं तो वह संस्कारी बेटी अपने पिताजी से कह देती है कि जिस गाडी में मैं कोलेज जाऊँगी उस गाडी के ड्राइवर के ऊपर मुझे कोई भरोसा नहीं है ।

(२)

संस्कारी परिवार में जो लड़के-लड़कियाँ हैं उनका माँ के ऊपर असीमित प्रेम है । सभी लड़के-लड़कियाँ माँ के द्वारा दिए गए सद्भाव और सहानुभूति की बातों को करते हुए नहीं थकते पुत्र-पुत्रियों के दिल को जीत लेने वाली उन माताओं की किसी भी बात का उत्थापन करने के लिए लड़के-लड़कियों कभी भी तैयार नहीं होते ।

एक समय की बात है एक दिन परिवार के सभी सदस्य इकट्ठे बैठे हुए थे तभी-सभी नवजवान लड़के-लड़कियों को सम्बोधित करते हुए जब माँ ने सबके सामने एक बात रखी कि...

तुमलोगों को अपना-अपना मोबाइल और लेपटोप रात के नव बजे के बाद मुझे सौंप देना है ।

और प्रसन्न हो करके सभी बेटे-बेटियों ने माँ की बात की सहर्ष स्वीकार कर लिया

शाला महाशालदि थीं ज्यारे प्रवेशे गृहमां
पूछपरछ करवी संगनीं ए वात विसरशो नहीं।

संतानों को न भूलने वाले माता-पिता अपने लड़के-लड़कियों स्कूल, अथवा ट्यूशन से वापस आने के बाद उनसे प्रेम से पूँछते हैं कि आज सर टीचर ने क्या पढाया है ?

पढने के अलावा और क्या बात की ?

आज तुमने किन-किन मित्रों के साथ क्या-क्या बात की ?

मित्रों के साथ कहाँ-कहाँ घूमने गये थे ?

आज बाहर का क्या-क्या खाया ?

इन सभी प्रश्नो को इतने प्रेम से और शुभाशय से पूँछते हैं कि बच्चे जो कुछ भी होता है उसका सच्चा जवाब देते हैं।

विकृतियों का तूफान ऐसा बह रहा है और नास्तिकता की हवा इतनी तेज गति से चल रही है कि पूँछ-ताछ न करने वाले माँ-बाप अपने लडके-लडकियों के अचानक एकाएक नास्तिक बन जाने की बात जब सुनते हैं तब तक खूब देर हो चुकी होती है ।

कक्षा १०-१२ स्पेश्यल ट्यूशन क्लास के १०० बालक बालिकाओं का बरसों से ब्रेइनवोस करने वाले एक नास्तिक सर का प्रसंग सुनने योग्य है ।

बोर्ड की परीक्षा का कोर्ष समाप्ता हो जाने के बाद प्रतिवर्ष की तरह अपने क्लास के बालकों का ब्रेइनवोस करने वाले सर ने बोर्ड पर एक वाक्य लिखा ।

'GOD IS NO WHERE'

विद्यार्थी मित्रो ! आज मुझे तुमसे खूब ही महत्वपूर्ण बात करनी है कि इस संसार में भगवान जैसी कोई वस्तु कहीं पर भी है ही नहीं । मैं तुमसे तीन प्रश्न पूँछता हूँ ।

प्रश्न १ - विद्यार्थी मित्रो ! क्या तुमने भगवान को कभी भी कहीं देखा है ? नहीं सर । प्रश्न २ - क्या भगवान की आवाज कभी तुमने सुनी है ? नहीं सर । प्रश्न ३ - क्या किसी ने भी भगवान का स्पर्श किया है ?

नहीं सर । तो फिर इस बात से यह निश्चित हो जाता है कि भगवान जैसी कोई चीज इस दुनियाँ में है ही नहीं । तो फिर किसलिए पत्थर का भगवान बना करके उसकी पूजा करते है ? जो लोग मन्दिरों के पीछे और मूर्तियों के पीछे रुपया खर्च करते हैं वे बुद्धि के बारदान हैं । पत्थर के मन्दिर और मूर्तियाँ तो जड़ हैं और जड़ मूर्ति की पूजा,दर्शन करने वाले लोग अक्क्ल के ओथमीर हैं । उन बुद्धुओं को खबर नहीं है कि पत्थर की जड़ गाय जैसे दूध नहीं देती वैसे ही पत्थर की जड़ मूर्ति को पूजने से कोई फायदा होना नहीं है । बालको ! तुम लोग आज से तय करो कि मुझे पत्थर की पूजा करके समय बिगाड़ना नहीं है ऐसी अनेक बातों को करके १५ से २० मिनट के बाद जब सर मौन हुए तब इन सभी बातों को सुनते हुए मन मसोसते हुए एक तपोवनी शिबिरार्थी बालक खड़ा हो करके कहता है - सर ! प्लीज क्या आप मुझे पाँच मिनिट का समय देंगे ? मुझे भी हमारे मित्रों से थोड़ी बात करनी है । आओ दोस्त ! मेरे पास आओ, और वह शिबिरार्थी बालक सर के पास जा करके सर का चरण स्पर्श करके नमस्कार करता है और सबसे पहले सर को कहता है कि सर ! मुझे माफ करना आप को अच्छी न लगे ऐसी कुछ बातें आज करनी पड़ेंगी, बुरा तो नहीं मानोंगे ? अरे दोस्त ! बोल, तु चिन्ता न कर ?

और वह शिबिरार्थी बालक बोलना शुरु करता है ।

डियर सर ! सबसे पहले तो मैने जो आपका चरणस्पर्श करके नमस्कार किया यह नमस्कार करने का संस्कार जो हमारे अन्दर दृढ हुआ है उसका मुख्य कारण मन्दिर और भगवान की मूर्ति ही है । जब मै छोटा था तभी से मेरी मम्मी मुझे हररोज जिनालय ले जाती और कहती बेटा दो हाथ जोड़ कर भगवान को जय जय करो । ऐसा कह कर के ही मुझ में नमन करने का संस्कार डाला था । इसीलिए उसी संस्कार के कारण ही आज मैं आप को नमस्कार कर रहा हूँ ।

सर ! हम सभी लोग इतने अभिमानी बन गये हैं कि जल्दी से किसी के सामने झुकने को तैयार ही नहीं हैं परन्तु ये मन्दिर और भगवान की मूर्ति हमको झुकना सिखाती हैं ।

अब दूसरी बात, आपने जैसे विद्यार्थियों से तीन प्रश्न पूँछे है उसी तरह से हमें भी हमारे मित्रों से तीन प्रश्न पूँछना है । दोस्तो ! हमारा पहला प्रश्न यह है कि क्या आप सभी लोगों को सर का दिमाग दिखाई देता है ? ना। क्या आप लोगों को सर के दिमाग के चलने की आवाज सुनाई देती है? ना । अब तीसरा और आखिरी प्रश्न क्या आप लोगों में से किसी ने भी सर के दिमाग का कभी भी स्पर्श किया ह? ना । तो सर ! यदि अब मैं ऐसा कहूँ कि सर के दिमाग को किसी ने देखा नहीं, किसी ने भी उसके चलने की आवाज भी नहीं सुनी और किसी ने उसका स्पर्श भी नहीं किया तो जैसे आप ने कहा कि भगवान जैसी कोई चीज है ही नहीं तो उसी तरह से मै भी ऐसा कह सकता हूँ कि सर में दिमाग जैसी कोई वस्तु है ही नहीं । जब कि मुझे ऐसी कोई भी बात नहीं करनी है कि आपके पास दिमाग नहीं है । कारण कि अदृश्य ऐसे दिमाग से भी आप बहुत सा काम कर सकते हो। इसीलिए मुझे भी यही कहना है कि अदृश्य ऐसी भगवान की अचिन्त्य शक्ति से और उनके उस प्रभाव से हमारे अन्दर मौजूद कामवासना, क्रोध, अभिमान आदि दोष खतम होने जैसे तमाम प्रकार के कार्य हो सकते हैं ।

अब सर ! आपने मन्दिरों और मूर्तियों के पीछे रुपया खर्चने वालों को बुद्धि का बारदान कहा है तो घर-घर में जिसने होली जलाई है संस्कार और संस्कृति को जिसने समाप्त कर दिया है उस टी,वी, के पीछे रुपया खर्चने वालों को आप क्या कहते हो ?

मन्दिर और मूर्तिर्या तो जड़ हैं उनकी कोई ताकत नहीं ऐसा कहने के माध्यम से

आपश्री जड़ की ताकत को मानने के लिए तैयार नहीं हैं तो मुझे आपसे एक बात पूँछनी है कि सर ! कभी आपको सरदर्द हुआ है ? हाँ, ४-५ घंटे पढाने से लगभग प्रतिदिन सरदर्द होता ही है । तो फिर सरदर्द को मिटाने के लिए आप क्या करते हो ? मैं डॉक्टर के द्वारा दी हुई गोली लेता हूँ तो ५ ही मिनट में सर का दर्द खतम हो जाता है । अब आप ही बताइए कि गोली जड़ है कि चेतन ? गोली तो जड़ ही है । सर ! यदि जड़ गोली से सरदर्द मिट सकता है तो आपको इस बात को स्वीकार करना ही होगा कि जड़ की भी अपनी ताकत होती है ।

मोबाइल भी जड़ है फिर भी उसकी कितनी गजब की ताकत है -

कमप्यूटर भी जड़ है फिर भी उसकी कितनी गजब की ताकत है -

और उसी तरह से होर्डिंग के ऊपर लगे हुए और दीवाल के ऊपर चिपके हुए फोटो भी जड़ हैं । फिर भी मन के ऊपर उनकी विपरीत असर देखने को क्या नहीं मिलती ?

जैसे मम्मी-पापा दादा-दादी आदि का फोटो जड़ होते हुए भी हमको उनकी सच्ची पहचान करा सकता है उसी प्रकार जड मूर्ति भी भगवान की सच्ची पहचान करा सकती है । मूर्ति भले ही जड़ है परन्तु उसके दर्शन मात्र से ही पाप का नाश और दोष का विनाश होते हुए देखा गया है । और इसीलिए तो जब रावण अपनी रुप परावर्तिनी विद्या के प्रयोग के द्वारा साक्षात् रामचन्द्रजी बन करके शीशे के सामने अपना चेहरा देखने के लिए गया तो उसी समय सीता के प्रति उसकी कामवासना समाप्त हो गयी ।

मूर्ति की ताकत जड़ होने पर भी कितनी गजब की होती है उसका साक्षात उदाहरण यदि कोई भी है तो एकलव्य का है ।

पाँचो पाण्डवों के साथ गुरु द्रोणाचार्य वन में खूब अन्दर पहुँच गये हैं । गुरुजी थक गये हैं इसी से आराम करने के लिए एक घटादार बरगद के पेड़ के नीचे बैठे हैं और उनके साथ भीम,युधिष्ठिर, सहदेव,नकुल भी बैठे हुए हैं । अर्जुन अकेले बन में घूमने के लिए आगे निकल गए हैं । वहीं पर तीरों से भरे हुए मुँह वाले एक कुत्ते को देखा और जोर से आवाज लगाई गुरुदेव ! आश्चर्य आश्चर्य आप इधर आओ और एक आश्चर्यजनक दृश्य देखो ।

गुरु द्रोणाचार्य भी चार पाँडवों के साथ अर्जुन के पास आए । तब अर्जुन ने गुरु

द्रोणाचार्य को उस कुत्ते को दिखाया । पाँचों पाँडवों तथा गुरुदेव उस अद्‌भुत धनुर्धारी को ढूँढने के लिए अलग-अलग दिशाओं में गये । और उसी समय जंगल के एक कोने में से किसी के साथ बात करते हुए और धनुष का टंकार करते हुए एक नवजवान अर्जुन के साथ चल रहे गुरु द्रोणाचार्य की नजर में आया । अर्जुन ने उसका नाम पूँछा और अद्‌भुत धनुर्विद्या सिखाने वाले उसके गुरु का नाम पूँछा । तब उस युवान ने कहा कि मेरा नाम एकलव्य है और मेरे गुरु का नाम द्रोणाचार्य है । साक्षात् द्रोणाचार्यजी ने मुझे भले ही धनुर्विद्या सिखाने के लिए मना कर दिया हो परन्तु उसके बाद मैने उनकी मूर्ति बनाकर उनके प्रभाव से ही मैं धनुर्विद्या सीख सका हूँ । यह जड़ मूर्ति का ही प्रभाव है

सर ! आप के पास १०० रुपया की नोट हो तो मुझे दोगे ?

सर ने ५०० रुपया की नोट पोकेट में से निकाल करके उस बालक के हाथ में रख दिया ।

सर ! इस कागज के टुकड़े कर डालूँ? अरे मूर्ख इसे तू कागज कहता है? यह कागज नहीं यह तो रिजर्व बैंक ओफ इन्डिया के गवर्नर की सही के साथ छापी हुयी ५०० रुपया की नोट है ।

बहुत अच्छा सर ! जैसे कागज ५०० रुपया की नोट बन सकता है उसी तरह शिल्पी भले ही पत्थर में से भगवान की मूर्ति बनाता हो परन्तु हमारे आचार्य भगवन्त अंजनशलाका और प्राणप्रतिष्ठा की लोकोत्तर विधि के द्वारा उस मूर्ति को मूर्ति में से भगवान स्वरुप बना देते हैं । जिस तरह से ५०० रुपया की नोट को कागज का टुकड़ा या जड़ नहीं मानते उसी तरह से पत्थर की मूर्ति को भी जड़ या पत्थर नहीं कहा जा सकता ।

अन्त में शिबिरार्थी विद्यार्थी ने सर द्वारा पहने गये मोटे काँच के चश्मे को माँगा । सर ने दिया तब विद्यार्थी ने कहा सर ! अब आप को चश्मे के बिना कैसा दिखायी देता है बिलकुल नहीं । मेरा चश्मा ६ नंबर का है । तो सर ! अब हमारा आप से आखिरी प्रश्न कि यह चश्मा जड़ है कि चेतन ? चश्मा तो जड़ ही है ना । तो सर ! जड़ जैसी चश्मे की ताकत को यदि आप मानते हो तो जड़ ऐसी मूर्ति की ताकत को आपके जैसे डिग्रीधारी बुद्धिशाली लोग किसलिए मानने को तैयार नहीं हैं यह मेरी समझ में नहीं आता ।

शिबिरार्थी विद्यार्थी की अकाट्य दलीलों से उस नास्तिक सर को उस दिन से जड

की ताकत को स्वीकार करना ही पड़ा । मन्दिर और मूर्ति के पीछे छिपी हुयी भक्तों की आस्था और उससे उत्पन्न प्रभावों की बातों को मानना ही पड़ा । इतना ही नहीं उस दिन के बाद कभी भी उसने अपने विद्यार्थियों का अहित करने वाला, नास्तिक बना देने वाला, ब्रेइनवोस करने का काम हमेशा के लिए छोड़ दिया ।

मेरा कहने का मतलब यह है कि प्रत्येक समझदार मम्मी-पप्पा को स्कूल, कोलेज अथवा ट्यूशन में जाने वाले बाल-किशोर -युवान और युवतियों की अनेक बातों के विषय में पूँछ-ताछ करनी ही चाहिए ।

मोबाइल के विषय़ में भी अपनी संतानों की देख-रेख तथा चेकिंग करने का समय आ गया है । यह बात भूलने जैसी नहीं है ।

विषय संलग्न कुछ प्रसंग

गर्भ से ही संस्करण की पूज्य गुरुमाँ की बातों को प्रवचनों में कानों के द्वारा सुनने के बाद करोड़पति घर की एक पुत्रवधू ने अपने गर्भकाल का ज्ञान होते ही उस स्त्री ने टी,वी, देखना संपूर्ण बंद कर दिया । छापाओं की वीभत्स पूर्तियों तथा उसमें आने वाली गंदगी को देखना और पढना बंद कर दिया । दोनो समय प्रतिक्रमण करना शुरु कर दिया और नवस्मरण का पाठ चालू किया। सवा लाख नवकार के गिनने के लक्ष्य से साथ हररोज १००८ नवकार गिनना चालू किया साधू-साध्वीजी भगवंतों को भावविभोर हो करके वहोराना चालू किया । और तीर्थकर प्रभु महावीर की शौर्य कथा पढना शुरु किया ।

इन सभी बातों का परिणाम उसके जन्म लेने वाले बच्चे में देखने को मिला । जन्म के पहले दिन से ही वह बालक उबाला हुआ पानी तथा रात्रिभोजन बिना रहने लगा । साधु-साध्वी को देखते ही हँसने लगता है । परन्तु उनको वहोराने के लिए जिद करके वहोराये विना रहता नहीं था । नवकारमंत्र आदि सूत्रों को २-४ बार बोलवाते ही उसे कंठस्थ हो जाता है । आज उसे लिखना पढना नहीं आता फिर भी पाँच प्रतिक्रमण के सूत्र विधिसहित याद हैं । रोज दादा के साथ उपाश्रय में देवसिय प्रतिक्रमण के लिए अवश्य जाता है ।

इस संस्कारी माता को अपना सुपुत्र आठ वर्ष की उम्र में ही संयमी बने ऐसी तीव्र इच्छा है

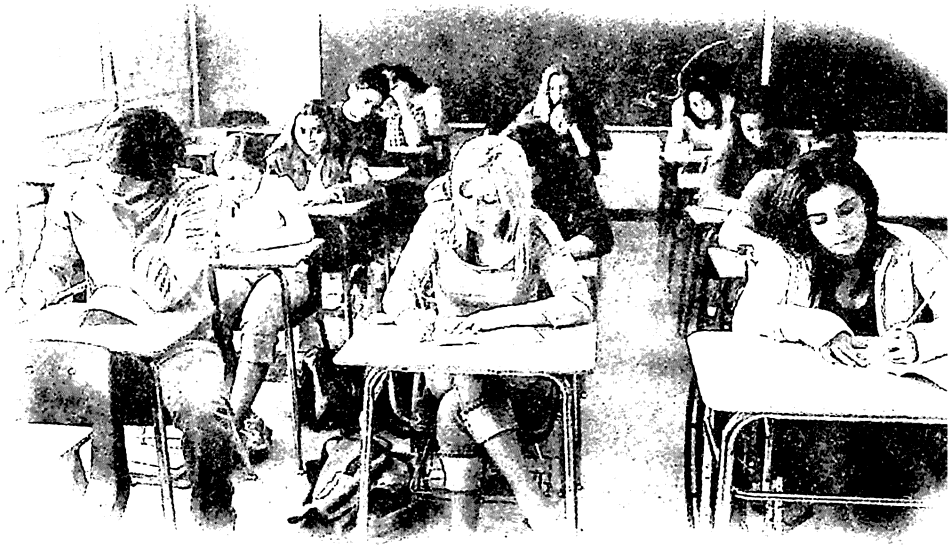

संस्कारने संस्कृतिनुं धोवाण ज्यां अतिशय थाय छे कोन्वेन्टना संग थी सदा दूर राखजो संतान ने

जिस कोन्वेन्ट स्कूल में लड़के लड़कियों के माथे पर से तिलक मिटा देने के बाद ही प्रवेश मिलता है ।

जिस कोन्वेन्ट में हाथ में चुडियाँ पहननें नहीं दी जाती।

जिस कोन्वेन्ट स्कूल में जाने वाली लड़कियाँ घुटने के नीचे तक लम्बा फ्रोक पहनकर नहीं जा सकती हैं ।

भारतीय संस्कृति और संस्कार का सर्वनाश करने वाली मात्र धर्मान्तरण के बदइरादे से ही स्थापित की गयी ऐसे कोन्वेन्ट स्कूलों में लाखों रुपया फीस भरकर अपने बालकों को पढाने वाले अभिभावक मेरी दृष्टि में **पेनी वाइझ पाउन्ड फुलिश** हैं । रुपया खर्च करके मूर्ख बनने वाले हैं । जहाँ प्रवेश पाये हुए बच्चों के लिए ऐसा कहा जा सकता है

कि नयी पीढी के सभी बच्चे ''ध आर ओल क्रिश्चियन विधाउट क्राइस्ट'' क्रोस पहने बिना ही क्रिश्चियन हैं । वे बच्चे भारतीय होते हुए भी, हिन्दू होते हुए भी रहन-सहन और विचारधारा से पूरे क्रिश्चियन बन गये होंगे ।

अभी जल्दी ही एक कोन्वेन्ट स्कूल में एक प्रसंग बन गया । कक्षा १० के बच्चों को माय पेरेन्टस विषय पर एक निबन्ध लिखने को दिया गया । होमवर्क में क्लास के बच्चों नें निबन्ध तैयार करके स्कूल में मेडम को पीरियड में निबन्ध पढ़ने को दिया । मेडम नें निबन्ध को चेक किया । जिसमें एक बालक नें लिखा था कि मम्मी-पप्पा घर के जीते-जागते भगवान और भगवती हैं । परन्तु यह बात मेडम को अच्छी न लगी । मेडम ने दूसरे दिन चालू पीरियड में उस बच्चे को अपने पास बुलाकर एक तमाचा मारा और कहा नोनसेन्स , तु मम्मी पापा को भगवान मानता है । यह तुम्हारी सबसे बड़ी भूल है । याद रखना इस संसार में एकमात्र यदि कोई भगवान है तो वह है जीसस क्राइस्ट मम्मी-पप्पा को आज के बाद कभी भी भगवान मानने की भूल नहीं करना ।

मेडम ने कहा मम्मी-पप्पा कौन हैं तुम्हें पता है ?

यदि पता न हो तो सुन ले

मम्मी-पप्पा तो हम सभी लोगों को पैदा करने के कारखाने हैं । दूसरा कुछ भी नहीं है ।

विषय संलग्न कुछ प्रसंग

अरबोपति शेठ के अरबोपति तीनो लड़के इतने अधिक उदारदिल हैं कि उन्हें अपनी सम्पत्ति के सद्व्यय का अवसर जहाँ भी दिखाई पड़ता है चाहे वह युवा शिबिर हो, बाल शिबिर हो या कि नयी पेढी के निर्माण का कारखाना तपोवन हो कभी भी देर नहीं करते

अगर उनसे यह पूछाँ जाता कि यह संस्कार तुम्हारे में कहाँ से आया है तो वे बेधडक कहते कि इस संस्कार को वारसा में देने वाले हमारे पूज्य पिताश्री हैं ।

फेशन व्यशनथी पायमाली जिंदगीनी थाय छे. ।
ए संगथी दूर राखजो ए वात विसरशो नहीं ।।

संतान को न भूलने वाले माँ-बाप अपनी आँखकी पुतली के समान अपने बेटे और बेटियों को कभी भी फैंशन और व्यसन के चक्कर में न फंसने दें।

क्या खुद मम्मी और पप्पा ही अपनी प्यारी संतानों को फैशन और व्यसन के चक्करमें पडने देंगे सही? हा, तो इस बात को प्रगट करता हुआ एक सत्य प्रसंग सुनो।

मुंबई में शांताक्रूजमें रहने वाले वेणीशंकर मोरारजी वासु के द्वारा हमारे पू.गरुदेव श्री को बताया हुआ यह किस्सा है । जब वे गुरुदेव श्री को मिलने के लिए आये तब उन्होने अत्यन्त आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा गुरुदेव। जैन परिवार में बनी हुई यह घटना है जिसे देखकर मैं स्तब्ध रह गया हूँ।

शांताक्रूज की सन अेन्ड सन होटल में मैं एक बार मात्र चाय पीने के लिए बैठा था तभी मेरे ही एपार्टमेन्टमें रहने बाले परन्तु व्यक्तिगत जान-पहिचान बिना के एक जैन परिवार को प्रवेश करते हुए देखा।कौतूहलवश वे लोग क्यां करते हैं उसे मैं ध्यान से देखता रहा ।

मम्मी-पप्पा अपने ही आठ वर्ष के पप्पू को होटलके बाहर रखे हुए राउन्ड टेबल उपर पडे हुए रंगीन पिक्चरवाले चंन्दामामा, चक्रम, सफारी आदि मैगजीनो को देखने के लिए कह कर ३ पैग विस्की का ओर्डर देकर होटल की स्पेशल केबिन में गये । दो विस्की के पैग एक -एक मम्मी और पप्पा पी गये और एक पैग एक छोटे से गिलास में लेकर मम्मी बाहर अपने पप्पू के पास आयी और पास में बैठ करके ''बेटा ! देख एक बहुत बढ़िया ड्रिंक्स तुम्हारे लिए लायी हुँ। ले पी ले... ऐसा कह कर मुँह से गिलास को लगा दिया । जहाँ पप्पू को एक घूट पिलाया वही थू.....थू.... थू... मम्मी मुझे अच्छा नहीं लगता मुझे नहीं पीना है। तब मम्मी पप्पू से कहती हैं बेटा! इस ड्रिंक्स को पीना तो सीखना ही पडेगा क्यों कि हमको मोर्डन बनना हैं । ऐसा कहते हुये मस्तक और कन्धे पर हाथ से सहलाते हुए धीरे-धीरे पूरा गिलास पिला दिया ।

यह कैसी माँ है कि जिसे माँ को अपने पुत्र के संस्कार की जरा भी चिन्ता नहीं है ।

आज ऐसी मातायें भी हैं जो अपनी पुत्रियों को फेशनेबल भडकाऊ और रंगीन चुस्त जींस पेंन्ट आदि वस्त्रों को पहेना करके स्कूल, कोलेजों में या तो खुद भेज रहीं हैं अथवा तो वस्त्रो को पहेन कर जाती हुई पुत्रियों को रोकती ही नही हैं।

आज एसी मातायें भी हैं जो अपनी बेटियों को सामने से ब्यूटी पार्लरो में भेज रही हैं और फैंशन शो में भी भेज रही हैं । अरे उससे भी आगे बढ करके मिस वर्ल्ड, मिस इन्डिया, मिस मुम्बई जैसी स्पर्धाओं में भाग दिलाने के लिए भेज रही हैं परन्तु उन बेटियों को स्पर्धाओं में जाने वाली लडकियों के शील के साथ कैसा व्यवहार होता हैं।

संतान ने स्नेह आपजो वात्सल्य थी न्हवडावजो साथे समय पण आपजो अे बात कदी भूलशो नहीं ।

संतानो को न भूलने वाले मा-बाप अपनी संतानों को प्रेम और वात्सल्य से भिगो देते हैं ।

जो मा-बाप इस बात की उपेक्षा करते हैं उन्हें उसका खराब परिणाम वृद्धावस्था में भोगने के लिए तैयार रहना ही पडता है ।

हमारे पूज्यपाद गुरुदेवश्री का चिंतन तो ऐसा है कि जिस घर में माता-पिता दोनों नौकरी करते हैं और अपनी प्यारी संतानो को बेबी-सीटर या घोड़ियाघर में रख देते हैं उन माँ-बापों की घोड़ियाघर से शुरु हुई यह चैनल बच्चे जब बड़े हो जाते हैं तब माँ-बाप को वृद्धाश्रम में रख करके पूरा कर देते हैं ।

मम्मी-पप्पा को अपने संतानो को भरपूर प्रेम और वात्सल्य देना ही चाहिए । यदि ऐसा नहीं होगा तो बेचारे बच्चे कोलेज में जाने के बाद किसी युवान युवा युवती के साथ प्रेम में पड़कर प्रेम और हूँफ लेने के लिए लवमैरेज कर लें तो आश्चर्य नहीं मानना ।

एक स्कूल में एक आध्यापिका ने अपने पीरियड में ही निबन्ध स्पर्धा का आयोजन किया । विषय था यदि आप पर भगवान प्रसन्न हों तो आप क्या माँगोगे ? ३० मिनट में निबन्ध लिखना था । लिख जाने के बाद उस शिक्षिका बहन नें सभी बच्चों से निबन्ध लेकर इकट्ठा किया ।

निबन्धों को घर ले जाने के बाद शाम के समय वे निबन्ध चेक कर रहीं हैं तब उन्होंने देखा एक विद्यार्थी ने अपने निबन्ध में लिखा था कि हे भगवान ! तुम यदि मेरे ऊपर प्रसन्न हो जाओ तो मुझे टी.वी. बना देना । मैं टी.वी. बनने की इच्छा इसलिए कर रहा हूँ क्यों कि मम्मी पप्पा को मेरे पास बैठने का समय ही नहीं मिलता । यदि मैं टी.वी. बन जाऊँगा तो मेरे मम्मी-पप्पा को मेरे सामने बैठ करके प्रेम से मेरे सामने देखने का समय तो मिलेगा ही । मेरी देख-रेख तो करेंगे ही । और यदि बाहर से थक कर के आयेंगे तो मुझे मेरे मम्मी -पप्पा की थकान उतारने का लाभ भी मिलेगा ही ।

निबन्ध के शब्दों को पढने के बाद शिक्षिका बहन की आँखों में से आँसुओं की धार बह रही है । बेचारा बालक ! वे कैसे माँ-बाप होंगे जिनके बच्चों को टी.वी. बन जाने की इच्छा हो रही है । लाओ मैं देखूँ तो सही क्या नाम है उस बालक का और जहाँ बच्चे का नाम पढती है उसी समय घर में पतिदेव का प्रवेश होता है । पतिदेव पत्नी से रोने का कारण पूँछते हैं । तब पत्नी ने पतिदेव को बच्चे द्वारा लिखा हुआ निबन्ध पढने के लिए दिया । पति ने भी पत्नी से कहा कि इस बच्चे के माँ-बाप भी कैसे हैं कि बच्चे को टी.वी.बनने की इच्छा हुई । उसी समय पत्नी ने कहा कि इस टी.वी. बनने की इच्छा करने वाले बच्चे के माँ-बाप और कोई दूसरा नहीं हम आप ही हैं । पत्नी की बात को सुनते ही पति सन्न रह गया । इस प्रसंग के बाद मम्मी ने शिक्षिका की नौकरी छोड़ दी । कारण एक ही कि अपने बच्चे को अधिक से अधिक प्रेम-वात्सल्य और समय दे सके ।

संतान को न भूलने वाले माँ–बाप दोनों नौकरी करने का कभी भी विचार न करें।

आर्य संस्कृति में माता के मुख्य कार्यो में भी मुख्य और महत्वपूर्ण कार्य है अपने बच्चों में प्रेम और वात्सल्य के द्वारा संस्कार का सिंचन करना ।

संतान को जब माँ-बाप की तरफ़ से थोड़ी मिनिटों के लिए भी प्रेम, वात्सल्य और समय नहीं मिलता है तब बिचारे बालक की मानसिक स्थिति क्या होती है उसका एक किस्सा तुम्हें सुनाता हुँ ।

घर में रहने वाली लड़की को पिता से बहुत ही लगाव होता है । जब दिन पर दिन बीतते जाते हैं पिताजी बेटी को बुलाते ही नहीं हैं । पास में बैठ कर बात भी नहीं करते तब एक दिन बेटी पिताजी से कहती है ।

पप्पा प्लीज ! मेरे पास पाँच मिनट बैठो तो !

बेटी ! मेरे काम पर जाने का समय ही ऐसा है कि मै तुम्हारे साथ बैठ नहीं सकता।

कुछ दिन बीतने के बाद फिर से ।

पप्पा प्लीज ! मेरे पास केवल पाँच ही मिनट बैठो तो !

मैने कहा न कि मै बहुत ही बिजी आदमी हूँ ।

पप्पा ! ठीक है आपको एक घन्टे का कितना डोलर मिलता है ?

२५ डोलर, किन्तु तुम्हें इससे क्या मतलब ?

कुछ नहीं पप्पा खाली जानने के लिए पूँछा है ।

कुछ दिन के बाद एक छुट्टी के दिन भी जब पप्पा अपने काम में व्यस्त होते हैं तभी -

पप्पा ! मैने अपनी बचत बैंक में से यह २५ डोलर आपको देने के लिए लायी हूँ । यह २५ डोलर ले करके तो आप मुझे एक घंटे का समय दोगे न ???

और पुत्री के द्वारा कहे गये इस वाक्य को सुन करके पप्पा का हृदय हचमचा उठा । पप्पा ने बेटी को गले से लगा लिया और पूरा दिन अपनी प्यारी बेटी को दे दिया । इतना ही नहीं दररोज बेटी को प्रेम-वाल्सल्य और समय देने के लिए निश्चय कर लिया ।

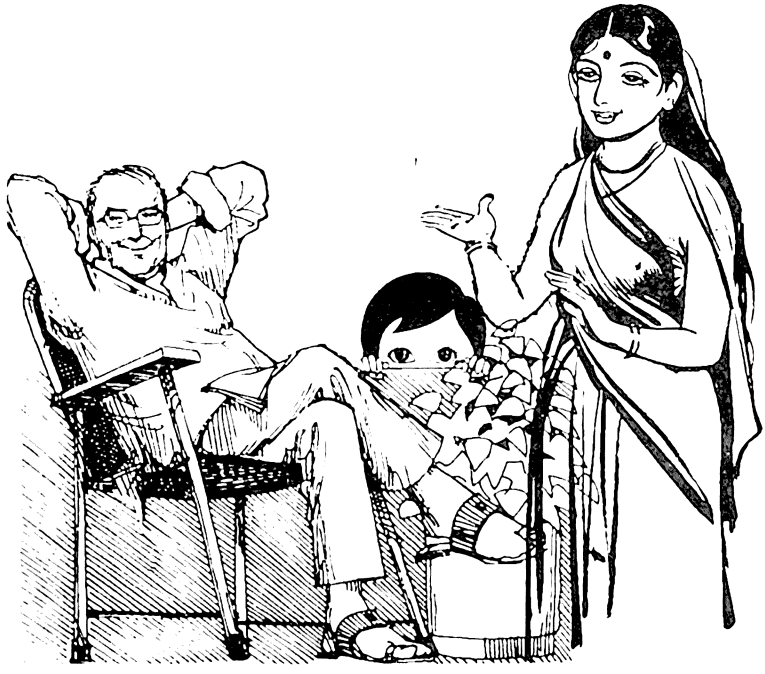

तमे स्वामी हो के गृहणी हो ने होय परस्पर प्रेम
पण संतान आगण चेनचाणा प्रेम ना करशो नहीं

अवगुण तमारी जिंदगी मां केटलाय हो भले
संतान आगण अवगुणों ने प्रगट कदी करशो नहीं ।

कभी-कभी घर के स्वामी पप्पा को और गृहिणी श्रीमती मम्मी को ख्याल ही नहीं रहता है कि उनके व्यक्तिगत जीवन की प्रेम चेष्टाओं की बालक के ऊपर क्या असर हो सकती है । और यही कारण है कि अज्ञानतावश अथवा मोहवश हो करके वे ही पति-पत्नी संतानो की हाजिरी में ही प्रेम की कुचेष्टाओं को करते हैं और जिसकी गंभीरता को समझने के लिए भी वे तैयार नहीं होते । भारत की इस भव्य भूमि पर कैसी अघटित घटना घटी है वह सुनने जैसी है ।

एक अंग्रेज ओफिस की मैडम की तबियत खराब हुई । पेट में दर्द शुरु हुआ और वह बढता गया और दर्द असह्य हो गया । अनेकों वैद्यों डोक्टरो की दवा लेने के बाद भी वह दर्द मिटा नहीं । लाखों रुपया पानी की तरह खर्च कर दिया गया । बेडरुम से निकल रही मैडम की करुण चीखों को घर में काम कर रहे चाँपराज से सुनी नहीं जा रही थी । उसने अपने बोस से कहा, बोस,मेडम की दवा करने का एक अवसर मैं भी लेना चाहता हूँ । बोस ने कहा अरे, जिस रोग में अच्छे-अच्छे वैद्यों और डोक्टरों की दवा काम न कर सकी उसकी दवा तुम क्या करोगे फिर भी उसे दवा करने की छूट दे दी । चाँपराज एक कमरे में गया और ५०० दंड-बैठक लगा करके शरीर को पसीने से सराबोर कर देता है और एक गिलास पानी ले करके उसी में अपने पसीने की १० बूँदें डाल देता है । और फिर मैडम के बेडरुम मे जा करके मैडम से कहता है बा, लो इस गिलास का पानी पी जाओ । मुझे विश्वास है कि थोड़े ही समय में आप इस असाध्य बीमारी में से मुक्त हो करके स्वस्थ हो जाओगी । भयंकर वेदना के त्रास से त्रासित मेडम ने तुरंत ही उस गिलास का पानी गटगटा कर पी लिया। और प्रत्येक मिनट में घटता हुआ वह रोग आधे ही घंटे में सम्पूर्ण रुप से मिट गया । मेडम पीड़ा से मुक्त हुयीं और खुशखुशाल हो करके सामने ही खड़े हुए पतिदेव को चाँपराज को सुन्दर इनाम देने की बात की

तभी ओफिसर साहब ने पूँछ,अरे चाँपराज, तुमने इस गिलास में कौन-सी दवा का मिश्रण बनाकर दिया कि मेडम रोगमुक्त हो गयीं । तब चाँपराज ने कहा, बोस, मुझे अभयवचन दो तो ही में इस औषधि की बात करने को तैयार हूँ । बोस के अभयवचन देते ही चाँपराज ने कहना शुरु किया । साहब सुनिए, बरसों पहले की बात है जब मैं पालने में खेल रहा था और मेरी माँ पालने को झुला रही थी मै जाग रहा था और सतत मेरी नजर माँ के ही तरफ थी । और उसी समय मेरे पिताजी ने घर में प्रवेश किया और मेरी माँ के पास आकर माँ के गाल पर प्रेम से एक टपली मारी । जैसे ही मेरे पिताजी ने मेरी माँ के गाल पर टपली मारी कि तुरंत ही यह पालने में लेटा हुआ बालक हमारे दोनों के बीच होने वाली प्रेम चेष्टाओं को यदि देख गया होगा तो इसके मानस पटल पर कैसा खराब संस्कार पड़ेगा और वास्तव में मै उस समय माँ को ही देख रहा था । यह देखकर माँ को बहुत गहरा आघात लगा और उस रात में ही जीभ कुचल कर माँ ने अपघात कर लिया । बोस, ऐसी पवित्र माता का में सपूत हूँ । और ऐसी सदाचारी माता के संस्कार से परिप्लावित शरीर में से निकले हुए पसीने की १० बूँद मिश्रित एक गिलास पानी ही मैने दिया जिसने

दवा का काम किया । और जिस दवा से मैडम रोगमुक्त हुयी है । उस ओफिसर ने मेडम को रोगमुक्त करने के बदले में चाँपराज को एक लाख रुपये का इनाम दिया।

माता की यह ताकत थी कि जो ताकत सीधे उसकी संतान में उतर गयी थी ।

विषय संलग्न कुछ प्रसंग

एक संस्कारी धर्मी पिता का १५ - १७ वर्ष की उमर तक स्कूल जीवन में संस्कारी रहने वाला किशोर जब कोलेज जीवन में प्रवेश करता है तब लबाड़ मित्रों के कुसंग में फँस जाता है । सभी लोगो नें मिल करके जब २५ वर्ष की एक युवती को होटल में छेड़ती के लिए बुलाया तब वह चालाक युवती होटल में गयी तो सही परन्तु अपने पहलवान जैसे चार भाइयों को ले करके गयी । सबसे पहले वह युवती होटल में प्रवेश करके डाइनिंग टेबल की कुर्सी पर बैठती है कि तुरंत ही वे लबाड़ मित्र उसके साथ छेडती और कुचेष्टा करने की अभी तैयारी ही कर रहे थे कि वहीं पर ही उस युवती के छुपे हुये पहलवान जैसे चारों भाई प्रीप्लान के मुताबिक उन लबाड़ मित्रों के ऊपर टूट पड़े और बहुत ही अच्छा मेथीपाक उन लबाड़ मित्रों को खिलाया । उसके बाद पुलिस को बुलाते हैं । पहले तो पुलिस ने उन तमाम लबाड़ मित्रों का नाम पता फोन नंबर आदि आवश्यक जानकारी लेकर जाने दिया । परन्तु रात के दश बजे के बाद उन तमाम लबाड़ मित्रों की धरपकड़ के लिए निकल पड़े । और अन्त में उस संस्कारी पिता के घर आये पूरी जानकारी दी और उस लड़के को भी गिरफ्तार करके जीप में बैठाते हैं । तभी एक पुलिस को उस धर्मी संस्कारी पिता ने ११000/- रुपया देकर कहा कि यह रुपया आप रख लो हमारे इस लड़के को ऐसा सबक सिखाओ कि कभी भी कुल को कलंकित करने वाला काम न करे

और वास्तव में उस धर्मी पिता का ११ हजार रुपये का प्रयोग सफल हुआ । लबाड़ मित्रों के कुसंग से बिगड़ा हुआ वह युवान पुलिस के डंडो को खा करके ऐसा सुधर करके घर आया कि उसके बाद फिर कभी भी किसी भी लड़की के लफडे में न पड़ने की कसम ले कर अपना जीवन परिवर्तन करता है ।

आ लोक लक्षी ना बनो परलोक लक्षी बनो तमे परमलोक लक्षी बनो तमे तो साचा माता-पिता तमे ।

३ प्रकार के माता पिता होते हैं । ? - जघन्य २ - मध्यम ३ - उत्कृष्ट ।

संतान को भूल जाने वाले माँ-बाप मात्र इस लोक में ही नजर रखते हैं । सत्संग के अभाव में ऐसे माता-पिता अपनी संतानो को केवल डिग्रीधारी ही बनाते हैं । इस लोक में सुखी बनें मात्र इतना ही लक्ष्य उनका होता है। संकुचित मनोवृति और दीर्घदृष्टि के अभाव के कारण बहुत से मम्मी-पप्पा इस भूल को कर करके बाद में पछतातें हैं । महाराष्ट्र में बनी हुयी एक सत्य घटना मैं आपको सुनाता हूँ ।

महाराष्ट्र का एक गाँव जिसका नाम नांदेड ।

वहाँ एक धर्मचुस्त ब्राह्मण रहते थे । जिनका नाम विट्ठल पांडे था । अभिलाषा उनकी पत्नी का नाम था । उनके लड़के का नाम विमल था जिसे लोग प्यार से चंकी कह कर बुलाते थे।

परिवार में एक ही पुत्र होने के कारण बहुत अच्छी तरह से उसका लालन-पालन भी हो रहा था । लड़का बड़ा हुआ । पढने में भी वह होशियार था । उसे कभी भी ८५ प्रतिशत से कम अंक प्राप्त नहीं किया । कोलेज में भी दो वर्ष बीत गये । इन्टर की परीक्षा में प्रथम स्थान मिलने के कारण चंकी को चारों तरफ से बधाइयाँ मिलने लगी ।

स्वजनों और स्नेहीजनों ने विट्ठल पांडे से चंकी को विशेष अभ्यास के लिए परदेश भेजने के लिए दबाव डालना शुरु किया ।

अत्यन्त प्रिय और एक ही पुत्र होने के कारण आँखों से दूर करके परदेश भेजने के लिए जीव नहीं मान रहा था । फिर भी उज्ज्वल भविष्य की आकांक्षा से दश हजार रुपये का कर्ज करके भी विट्ठल पांडे ने चंकी को पढने के लिए अमेरिका भेजा। शुरुआत के दो तीन साल तो अच्छे गये । परस्पर पत्र व्यवहार हमेशा चालू था । परंतु उसके कुछ ही समय के बाद पत्रों का जवाब मिलना बंद हो गया । माँ-बाप को चिन्ता होने लगी ।

६ महीने बीत गये । भेजे गये पत्येक पत्र के साथ मालिक हाजिर नहीं है ऐसा पोस्ट से लिख करके वापस आने लगा । बाप अस्वस्थ हो गया । माँ तो जैसे मुर्दा बन करके रह गयी ।

दश हजार रुपये का कर्ज तो चंकी के लिए किया ही था । व्याज का मीटर तो रात-दिन घूम रहा था । वहीं पर पांडे को चंकी की खोज के लिए परदेश जाने के लिए दूसरा दश हजार रुपया व्याज पर लेना पड़ा ।

माँ-बाप ने बिचार किया कि पैसा तो जैसे-तैसे करके कमा लेंगे परन्तु प्यारे बेटे को कैसे खो दिया जाय ?

अभिलाषा ने रोती हुई आँखों से पति को स्टीमर के ऊपर विदा किया । उसने कहा हमारे प्राणों से भी अधिक प्रियपुत्र चंकी का पता लगा करके मुझें तुरंत तार कर देना । बिचारी माँ ने तमाम प्रकार की मानता मानी । पांडे चंकी के पते पर

अमेरिका पहुँच गये । वहाँ पता किया तो उस घर में दूसरे लोग रह रहे थे । उन लोगों ने बताया कि तुम्हारा लड़का आज के चार महीना पहले ही यह घर छोड़ के चला गया है । वह यहाँ से डेढसौ किलोमीटर दूर गाँव में रहने गया है । इस तरह से कह कर चंकी का पता बता दिया ।

पांडे अद्धरताल श्वांसो के साथ उस नये ठिकाने पर पहुँचे ।

उस दिन रविवार था । सद्भाग्यवश चंकी घर पर ही था । घर में प्रवेश करते ही पिताजी ने अपने प्रिय पुत्र को गोरी स्त्री के साथ झुले पर बैठे हुए देखा । अत्यधिक प्रसन्नता से पिताजी अपने दोनों हाथ फैला कर दौडे । बेटा ! बेटा ! चंकी ! चंकी ! अभी तो ये संवेदना के सुर पूरे भी नहीं हुए थे कि उससे पहले ही पिताजी को देखकर घबड़ाया हुआ चंकी एकदम से खड़ा हो गया और चार कदम आगे बढकर पिता को गले से पकड़ कर जोरदार थप्पड़ लगा दिया । और अंग्रेजी में बोला, तु कालिया कौन है ? घर में हमारा बाप बनकर घुस गया है ? अमेरिका में तो ऐसे किस्से बहुत बनते हैं । बद्तमीज ! झुट्ठा ! बदमाश ! चोर ! चोर! इस तरह से बोलते हुए चंकी ने धक्के मार करके बाप को दरवाजे के बाहर निकाल करके दरवाजे को बंद कर दिया ।

हँसते हँसते वह गोरी पत्नी कि जिसके साथ लवमैरेज किया था उसके पास आया । पत्नी ने पूँछा, वह कौन था काला कोयला जैसा आदमी ?

चंकी ने कहा मैं कुछ भी नहीं जानता हूँ । परन्तु वह साला हमारा बाप बनकर घर में घुस गया । कितना नालायक है ।

पत्नी खूब हँसी । चंकी ने प्रेम किया । वह बोली, तुमने बहुत अच्छा किया । धक्के मार करके उसे घर के बाहर निकाल दिया ।

चंकी ने मनोमंथन करना शुरु किया । वह मन ही मन कहने लगा कि , मेरे पिताजी मुझे खोजते हुए यहाँ तक आ पहुँचे । मेरी इस गोरी पत्नी को यदि मालूम हो जाता कि यह आदमी मेरा बाप है तो उसकी विलक्षण आकृति और श्यामवर्ण के कारण वह मेरी कितनी मजाक करती । मुझे बार-बार कहती कि तुम्हारा बाप ऐसा जड़ और जंगली जैसा काला कोयले के समान है । हाश ! अच्छा हुआ कि मैने उसे भगा दिया । वह अब घर में आने का नाम भी नहीं लेगा ।

उधर विट्ठल पांडे आघात से तड़प रहे थे । लड़के को गवाँ देने का उन्हें पल भर में

ही एहसास हो गया । फिर भी चाहे जो भी हो पांडे भारतीय था । भारतीय लोगों में एक प्रकार का हौंसला तो होता ही है । लड़के के द्वारा किए गए अपमान को सहन करने के लिए वे तैयार न थे । उनके मन ने निर्णय ले लिया था कि एक वार कोर्ट द्वारा मै साबित कर दूँगा कि तु मेरा लड़का है और मै तुम्हारा बाप हूँ । यह साबित हो जाने के बाद मै तुरंत ही घर वापस लौट जाऊँगा । इस केस के पीछे भले ही मुझे तबाह हो जाना पडे । मुझे उसकी कोई परवाह नहीं है ।

पांडे किसी वकील के यहाँ गये । सभी बात का विस्तार से वर्णन किया । वकील खूब सज्जन व्यक्ति थे । लड़के की इतनी हद बाहर नीचता को सुन करके उन्हें बहुत दु:ख हुआ । पिताजी की आँखों से बहते हुए आँसू को देख करके वकील साहब भी रो पड़े ।

पांडे ने फीस का पहला भाग लेने के लिए कहते ही वकील साहब बोले अभी नहीं

वकील साहब ने कहा, मिस्टर पांडे ! आप दो दिन के बाद मेरे पास आवो तब तक मैं इस केस की पूर्व तैयारी कर लूँगा । मुझे यह जानना हे कि अनुवंश के विषय में विज्ञान ने ऐसी शोध की है कि नहीं जिसके आधार पर पिता-पुत्र का खून एक समान है या नहीं । उसका स्पष्ट निर्णय कर सके । जो ऐसी मशीन की शोध हो गयी होगी तो केस जीत लेने में मुझे जरा भी मुश्किल नहीं पड़ेगी ।

बहुत मुश्किल से पांडे ने होटल में रह कर दो दिन बिताये । तीसरे दिन सवेरे ही वे वकील साहब की आफिस में पहुँच गये ।

बीती हुयी दोनों रातों में वकील के दिमाग में बहुत से विचार आये और चले गये ।

पांडे का उचित सत्कार करके वकील ने बात की शुरुआत की । उन्होंने कहा कि , विज्ञान जगत में वैसे साधन की खोज बहुत पहले ही हो चुकी है। जिससे मैं ब्लडग्रुप की रिपोर्ट लगा करके जज के पास से अवश्य ही न्याय प्राप्त कर सकूँगा कि चंकी आपका ही लड़का है । परंतु पांडे साहब, अब आप मुझे एक सवाल का जवाब दें कि जिस लड़के ने आपका इतना घोर अपमान किया, आप को थप्पड़ मारा, धक्का मारा ऐसे दुष्ट बेटे का बाप साबित करके आपको क्या कोई लाभ हो सकता है ?

इस सवाल से पांडे हतप्रभ हो गये । उन्होंने तुरंत ही कहा, न जरा भी नहीं । वकील साहब मुझे कोई भी केस नहीं करना है।

उस सज्जन वकील ने फीस भी नहीं लिया । पांडेजी स्वदेश वापस आ गये । अभिलाषा ने पूँछा, बेटे का क्या समाचार है । पांडे ने कहा, तुम्हारा बेटा मर गया है उसकी बरषी,तेरहवीं कर डालो । अभिलाषा की आँखों से आँसू की धारायें बह रही थी । उसके बाद लगभग तीन वर्ष भी बीते न होंगे कि भिखारी जैसी फटेहाल हालत में चंकी को घर के आँगन में खड़े हुए माँ-बाप ने देखा ।

उस गोरी कन्या ने उसका सब कुछ लूट लिया था । गुंडो के पास से मार मराकर उसका हाल बेहाल कर दिया था । मित्र की मदद से जैसे तैसे वह अपने घर पहुँच सका था। माँ ने बहुत समय तक उसके माथे पर प्रेम से हाथ फिराया । प्रेम के बादल बरस पडे । फिर से चंकी घर का प्यारा स्वजन बन गया ।

हाथ ! पश्चिम की जीवनशैली ! जिसने हमारे कौटुम्बिक संबंधो से लेकर क्या-क्या छिन्न-भिन्न नहीं कर दिया !

मात्र आलोक लक्षी डिग्रीलक्षी शिक्षण लेने के लिए परदेश भेजे हुए पुत्र को परदेश में गोरी पत्नी के द्वारा की हुयी दुर्दशा को सुनने के बाद यहाँ पर बैठे हुए सभी माता-पिता बनना चाहते हों तो केवल एक ही काम करो कि **शिक्षण रुपी दूध में जहाँ संस्कार रुपी शक्कर को मिलाया जाता है उस तपोवन जैसी संस्था में ही अपने बच्चों को रखो ।**

तपोवन में प्रभु के साथ पागल बन करके प्रीत करने वाले गुरु सत्संग के रंग में रंग जाने वाले बच्चे संस्कार की सुवास से कैसे महकने लगते हैं उसका एक प्रसंग मैं आपसे बता रहा हूँ ।

हर्षिल परमार नामका कक्षा १० में पढने वाला एक होशियार बालक उपाश्रय में गुरुजी के पास आकर कहने लगता है कि - गुरुजी ! आज मुझे नीचे देखकर चलने की बाधा दे दीजिए । हर्षिल ! की युवान बहनें आज तपोवन में अपने भाइयों से मिलने आयेंगी ।

मेरी नजर इन युवान बहनों पर न पड़े इससे मेरी आँखो को इस बाधा के लेने के द्वारा सुरक्षित कर देना चाहता हूँ । जिससे मेरे मन में खराब विचार भी न आवें ।

तपोवन एक ऐसी संस्था है कि जहाँ पर डिग्रीलक्षी शिक्षण तो उच्चकोटि का दिया ही जाता है परंतु उसके साथ ही साथ बच्चे हिंसा –झूँठ–चोरी आदि पापों को न करें इसके लिए पूज्य गुरुजी भी अपनी वाचना के माध्यम से उसे परलोक दृष्टि वाला और पापभीरु भी बनाते हैं ।

सच्चे माता-पिता वही हैं जो अपने बच्चों को परलोकदृष्टि वाला बनाते हैं । अपनी शरण में आया हुआ संतान दुर्गति में न जाय उसकी चिंता करते हैं ।

एक देश में एक राजा था । राजा के गोपीचंद नामका एक राजकुमार था । सुन्दरता में तो उसके समान कोई नहीं था । राजा साक्षात कामदेव को ही देख लो । सुख-संपत्ति तो सभी तरह से मिली ही हुई थी । पिताजी का वह दुलारा था । माताजी का वह प्यारा था । प्रजाजनो के गले का हार था । युवानी के दरवाजे पर जैसे ही उसने पैर रखा कि बडे बुजुर्गो ने अनेक रुपवती राजकन्याओं के साथ उनका लग्न कर दिया । देवों को भी ईर्ष्या हो ऐसे वैभवी सुखों को यह राजकुमार भोग रहा था । दिन,महीने और वर्ष बीतने लगे । वैभव और विलास में गलाडूब राजकुमार की जिंदगी तेजी से बीतने लगी । समय किसी के लिए भी क्या कभी पलभर रुका है सही ?

राजकुमार की माताजी को इस बात का दु:ख था । मेरा पुत्र इसी तरह से अपना जीवन पूरा कर देगा ? इसका तमाम पुण्य यहीं पर भोग करके समाप्त हो जायगा क्या ? अरे ! इस बिचारे का परलोक में क्या होगा ?

एक दिन की बात है । हवेली के ऊपर माताजी अंटारी में खड़ी थीं ।

नीचे स्नानाघर में राजकुमार को उसकी प्रियतमाये स्नान करा रहीं थी । पूरे आनंद से । पूरी मस्ती से । शरीर पोंछने का कार्य चल रहा था उसी समय माताजी की आँख मे से आँसूओं की धारा बहने लगी ।उसी समय आँसू की एक बूँद लडके की पीठ के ऊपर भी पड़ी ! गरम बूँद के स्पर्श से आश्चर्य चकित हुए राजकुमार ने ऊपर नजर की तो देखा कि माँ रो रही थी ।

सब कुछ छोड़ करके कुमार माँ के पास दौड कर गये । माँ ! माँ ! तु क्यों रो रही है ?

बेटा ! भोग विलास के पीछे तुम्हारी यह पागलों जैसी दशा देख करके मुझे विचार आता है कि - जिस मानवभव में मोक्ष की साधना के पीछे पागल बना जाता है उस उत्तम मानवभव को तु भोग-विलास के पीछे पागल बन करके गवाँ रहा है । क्या यह वैभवी जीवन तुम्हें दुर्गति में तो नहीं ले जायगा ?

बेटा ! इसी बिचार से मेरी आँखों में आँसू भर आया है । और खानदानी राजमाता के सुपुत्र गोपीचंद ने तुरंत ही संसार का परित्याग करके भगवा वस्त्र पहन लिया

और वन की तरफ प्रयाण कर दिया ।

जघन्य कक्षा के माँ–बाप मात्र आलोकप्रिय डिग्रीलक्षी होते हैं । मध्यम कक्षा के माता–पिता परलोक तक दृष्टि वाले होते हैं परंतु उत्कृष्ट कक्षा के माता–पिता तो वही हैं जिनकी दृष्टि परमलोक तक जाती है । जैन इतिहास के पन्ने पर लिखे हुए प्रसंग के ये डायलोग सुनोगे तो वैसी धन्य माता के तुम्हें दर्शन हो जायँगे ।

जब भगवान नेमिनाथ की वैराग्यपूर्ण देशना को सुनते हैं तभी राजकुमार गजसुकुमाल के अन्दर प्रव्रज्या के भाव इस तरह से प्रज्वलित हो उठते हैं कि वे अपनी राजमाता देवकी के पास आ करके राजवैभवी सुखों को छोड़ करके संयम मार्ग को स्वीकार करने की बात करते हैं । तभी माता देवकी कहती है कि -

- बेटा ! संयम जीवन तो तलवार की धार पर चलने जैसा अति कठिन कार्य है ।

माताजी ! इसी संयम जीवन के प्रभाव से नरक में हजारों वर्ष तक असिपत्र की तीक्ष्ण धार जैसी भूमि पर चलाने वाले पाप कर्मो का मुझे नाश कर देना है ।

बेटा ! अभी तो तुम्हारी युवावस्था है , भोग सुखों को भोग कर वृद्धावस्था में संयम ग्रहण कर लेना ।

माताजी ! नीलकमल के पत्तों पर पड़ी हुई पानी के बूँदों का सूर्योदय होते ही जिस तरह से नाश हो जाता है उसी तरह से यह अपनी आयुष्य भी चपल है । चाहे जिस समय मृत्यु आ सकती है तो सशक्त शरीर से कर्मो के सामने युद्ध करने की जो ताकत होती है वृद्धावस्था में ढीले पड़ गये शरीर से वह कैसे हो सकती है ? इसलिए माताजी ! आप मुझे अब आर्शीवाद दो और आज्ञा दो ।

पुत्र की वाणी में तीव्र बैराग्य की धारा को देख करके माता देवकी ने कहा कि -

बेटा ! खुशी से तु प्रव्रज्या के पावन पंथ पर प्रयाण कर । परन्तु तेरी माँ की यह इच्छा है कि,

बेटा ! तु अब इस भवचक्र की मुझे आखिरी माँ बनाना ।

तु ऐसा उत्कृष्ट संयम जीवन जीना कि यहाँ से तुम्हारी आत्मा सीधे परमलोक की तरफ प्रयाण करे ।

कैसी उत्कृष्ट माता है कि जो अपनी संतान हमेशा के लिए परमलोक में शाश्वत

सुख का भोक्ता बने ऐसी इच्छा करती रहती है । अब ए, बी अथवा सी ग्रेड के माता-पिता के लक्षण कैसे होते हैं उन बातों को विचारना है ।

विषय संलग्न कुछ प्रसंग

संतान को न भूलने वाली माता उसे कहते हैं जो मात्र पुत्र और पुत्रियों के सुख की ही चिन्ता न करें बल्कि उनके सद्‌गुणों की चिन्ता करें । कभी अपने को ऐसा लगे कि मेरे संस्कार रुपी स्तन को पी करके बड़ा हुआ मेरा बेटा कुसंस्कारों का भोग बन गया है तो सच्ची माता को कितना दुःख होता है उसको बताती हुयी एक सत्य घटना सुनो ।

१५ वर्ष का अेस.अेस.सी. में पढ़ने वाला एक संस्कारी माँ का संस्कारी बालक मित्रों के अति आग्रह से टोकिज में जा करके पिक्चर देख करके आया । पूँछ-ताछ करने पर जब मम्मी को पता चला तब मम्मी ने दूसरे ही दिन उपाश्रय में जाकर साध्वीजी के पास अट्ठम का पच्चक्खाण ले लिया । साध्वीजी ने जब कारण पूँछा तब धर्ममाता ने जो जवाब दिया उस जवाब को सुन करके उस माता को वंदन करने की इच्छा हो जाय । उसने कहा है कि इस अट्ठम का प्रभाव मेरे लड़के पर अवश्य पड़ेगा ही ।

मैं एक श्राविका हूँ और मेरा लड़का जो गुणों का दिवाला निकाल कर सुखी होने की इच्छा करता हो तो मैं वह किसी भी कीमत पर चलाने के लिए तैयार नहीं हूँ । मेरे लड़के पर मुझे राग जरुर है परंतु साथ-साथ प्रेम भी है और इसलिए ही कुसंस्कारी बनकर लड़का दुर्गति में जाकर दुःखी हो ऐसा मैं नहीं चाहती । इसीलिए मैने अट्ठम किया है ।

और आश्चर्य हुआ कि जब अपनी भूल के कारण मम्मी को अट्ठम करना पड़ा है ऐसा लडके ने जाना तभी उसने अपनी मम्मी से कह दिया कि मम्मी से मैं आजीवन पिक्चर न देखने की बाधा लेता हूँ ।

दुःख दोष ने रोगो कदी नव आपशो संतान ने
' सी ' ग्रेड ना माता-पिता क्यारे तमो बनशो नहीं ।
जो वारसा मा आपशो संपत्ति मात्र संतान ने
' बी ' ग्रेड ना बनशो तमे ये बात विसरशो नहीं ।
' ए ' ग्रेड ना बनवुं हशे तो वारसा मा आपजो
संस्कार सारा आपजो दीकरो बने कुलदीवडो ।

बहुत से माता-पिता हमारे पीछे बेचारे संतानो का क्या होगा ऐसा विचारे बिना बेजवाबदार और बेफाम जीवन जीते हैं । और ऐसा धंधा करते रहते हैं कि अपनी संतानों के सिर पर कर्ज का बहुत बड़ा बोझ छोड़ कर चले जाते हैं । इस कर्ज का दुःख माथे पर ऐसा आ पडता है कि बेचारी संतान १०-२० वर्ष तक तो इस जवाबदारी में से मुक्त हो ही नहीं सकता ।

इस कर्ज के दुःख की अपेक्षा भयंकर दुःख तो माँ-बाप अपना डायाबिटीश, हार्टअटैक, ब्लडकैंसर आदि रोगों को वंश परंपरा में दे जाते हैं ।

मुझे ऐसे मम्मी-पप्पाओं को धर्मबुद्धि से नहीं परंतु संतानों के ऊपर हितबुद्धि से बताना चाहता हूँ कि वे अपनी इन्द्रियों के ऊपर सख्त नियंत्रण रखें । यदि माँ-बापो बेफाम विषय सुखों के भोगों का सेवन बंद कर दे तो उनकी प्यारी मे प्यारी वस्तु संतानें ! जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त रोगों के भोग बनने से बच सकती हैं ।

इस कर्ज के दुःखों और वंश परंपरा में आने वाले रोगों से भी अधिक भयंकर हैं संतानों में उतरने वाले वंशपरंपरागत दोष । माँ-बाप की कामवासना , क्रोधान्धता और रसलोलुपता आदि दोष संतानो को न मिलें उसके लिए समझदार और होशियार मम्मी-पप्पाओं को अत्यधिक जाग्रत और सजाग रहने की जरुरत है ।

सूरत का एक लगभग ४५ वर्ष का गर्भश्रीमंत नवयुवान जिसको टी.वी. देखने का ऐसा व्यसन हो गया था कि वह १४-१४ घंटे तो टी.वी. तथा विविध चैनलों के ऊपर आने वाले हृदय में वासना का जालिम तूफान पैदा करने वाले दृश्यों को देखने में ही बिताता था ।

यह कुसंस्कार उसके ५ वर्ष के बच्चे में इस तरह गया कि वह भी खाते-पीते कि होमवर्क करते करते भी टी.वी. देखा करता था । इतना ही नहीं उसके मम्मी-पप्पा उसे कह-कह करके थक गये तो भी किसी भी तरह से वह मानने के लिए तैयार न था।

परंतु सद्भाग्यवश उस युवान को उसके संतानो का संस्कार न बिगड़े इसलिए सद्बुद्धि उत्पन्न हुयी और उसने बच्चों की हाजरी में कभी भी टी.वी. न देखूँ इसके लिए आजीवन नियम ले करके अपना दोष संतानों में न उतरे उसकी घेराबंदी कर दी।

यदि प्रत्येक माँ-बाप इतने सत्वशाली बनें तो निर्दोष संतानों का जीवन बर्बाद होने से बच जाय ।

बी ग्रेड के कुछ माँ-बाप ऐसे भी होते हैं कि जो धीरुभाई अंबानी के जैसे दो पुत्रों मुकेश और अनिल को वारसा में केवल संपत्ति ही दे गये । उसी तरह संतानो को मात्र संपत्ति देकर ही परलोक की तरफ प्रयाण कर जाते हैं ।

इस तरह से पिता के पास से मिली हुई संपत्ति के ही केवल वारसदार बनने वाले

और संस्कार वगैर रहने वाले बेचारे संतान बड़े होने पर और शादी हो जाने के बाद माता-पिता को गोल्डनहोम में रखने में जरा भी संकोच नहीं करते । इस तरह से गोल्डनहोम में गये हुए उन माता पिताओं को पीछे से पछताने के दिवस आते हैं और संतान को संस्कारी न बनाने की भूल उनकी समझ में आ जाती है । परंतु तब तक तो बहुत देर हो चुकी होती है ।

और अब जिनको 'अे' ग्रेड का माता-पिता बनना होता है उन्हें अपनी संतानों को वारसे में केवल संस्कार मिले उसके लिए उन्हें जन्म से ही नहीं बल्कि गर्भ से ही उसके प्रति सावधान हो जाना जाहिए । इस तरह के संस्कार प्रेमी माता-पिता समझदार बन करके अपनी संतानों को प्रतिदिन नैतिकता और प्रामाणिकता का पाठ सिखाते रहते हैं।

इस तरह से बनी हुयी एक सत्य घटना मैं आपको बताता हूँ ।

एक गरीब परंतु संस्कारी पिता आसन्नमृत्यु पलंग पर पडा है । बचने की कोई भी आशा दिखाई नहीं दे रही है परंतु, अब १-२ घंटे के ही मेहमान हैं ऐसा पिताजी को लग रहा है । उन्होंने ऐसी स्थिति में अपने १५ वर्ष के युवान लड़के कुमार को अपने पास बुला कर कहा ।

कुमार बेटा ! अब मैं मात्र १-२ घंटे का ही महेमान हूँ ऐसा मुझे लग रहा है ।
पिताजी ! आप ऐसा न बोलो। अभी तो आप को बहुत दिन जीना बाकी है ।

पिताजी ! आपकी सेवा का लाभ तो मुझे मिला ही नहीं ।

बेटा कुमार ! आप जैसे कहोंगे उसी तरह से मैं जीवन जीऊँगा ।

तो बेटा कुमार ! सुनो, जिन्दगी में चाहे जैसी विकट परिस्थिति का निर्माण हो तो भी सच्चाई और प्रमाणिकता को ही तु अपना जीवनमंत्र बनाकर जीवन जीना । बेटा ! तु मेरे हाथ में हाथ रखकर मुझे यह वचन दे । और पिताजी के हाथ में अपना हाथ रखकर कुमार ने कहा पिताजी ! " आप ने जैसा कहा उसी तरह से ही मैं सच्चाई और प्रमाणिकता को ही अपना जीवनमंत्र बना करके आपकी इच्छा को पूर्ण करुँगा "। और ----- ऐसा लगता था जैसे कि लडके के पास से वचन लेने के लिए ही अपने प्राणों कों रोक रखा हो । इतना कह करके पिताजी परलोक चले गये ।

पिताजी की मरणोत्तर क्रिया को पूरा करके १२ दिन के बाद सम्पूर्ण परिवार की

जवाबदारी अपने माथे आते ही पढना छोड दिया और एक हाथलारी में माल की हेरा-फेरी करना और मजदूरी का काम करना शुरु कर दिया । हररोज १००-१५० रुपया के लिए सख्त मजदूरी करके भी उसने अपने परिवार का भरण-पोषण सादा भोजन-पानी से सादगी से पूरा कर रहा है । दिन-महीना और वरस बीत रहे थे तो भी अपने पिता की तरफ से मिली हुई वारसागत अद्भुत जीवंनशैली को बराबर पकड़ रखा है । अपने सद्भाग्य से एक संस्कारी कन्या के साथ उसका विवाह भी हो गया है।

एक दिन की बात है दोपहर के समय निर्जन रस्ते पर जब वह सामान से भरी हुई लारी लेकर जा रहा था । उसकी नजर रस्ते पर पड़ी हुई एक अटैची की तरफ गई । उसने उस अटैची को अपनी लारी में रख लिया । सामान को मालिक के यहाँ उतार करके दोपहर को खाने के समय घर गया । अटैची खोली अंदर देखा तो नगद पाँच लाख रुपया चेकबुक और जरुरी तमाम कागजात था । अटैची में रखे हुए कार्ड के ऊपर मालिक का पता लिखा हुआ था । जिसको पढते ही उसे ख्याल आ गया कि यह अटैची जी,आई,डी,सी, में स्थित एक बहुत बड़ी कम्पनी के मालिक की है । दोपहर का खाना खा करके थोडी देर आराम करके सबसे पहले वह फैक्टरी पर पहुँचा । फैक्टरी का मालिक माथे पर हाथ रख करके चिंतातुर मुद्रा में बैठा हुआ था । उसी समय हाथ में अटैची लेकर आये हुए नवजवान के ऊपर उसकी नजर गई । शेठ ! इस अटैची के मालिक आप ही लगते हो । लो इसे खोल कर देख लो । शेठ ने अटैची खोलकर नोट आदि सभी वस्तुओं का बारीकाई से निरीक्षण किया परन्तु एक भी रुपया और एक भी आवश्यक कागजात गायब नहीं हुआ था । यह देख करके शेठ ने उस नवजवान को खूब धन्यवाद दिया । और आभार मान कर पूँछा, दोस्त ! पाँच लाख में से एक हजार के नोट लेने की भी तुम्हारी इच्छा नही हुई । यह इस जमाने का सबसे बडा आश्चर्य है । शेठजी ! यह सभी प्रभाव मेरे पिताजी के मृत्यु के नजदीक आने पर वारसे में मिले हुए संस्कार का है । कि बेटा ! चाहे जैसी परिस्थिति आवे परन्तु सच्चाई और प्रामाणिकता को ही तु अपना जीवनमंत्र बना देना । बस, हमेशा इसी वाक्य को आत्मसात् करके मैने अपनी जीवनशैली को ढाल लिया है । इसलिए शेठ ! उपकार हमारे पिताजी का मानना मै अब चलता हूँ ।

अरे नवजवान ! तु अब नहीं जा सकता है । पिछले कुछ दिनों से संतानहीन मैं किसी बेटे को वारसदार के रुप में गोद लेने के लिए विचार रहा था । परंतु हमारा

सद्भाग्य कि तुम्हारे जैसा संस्कारी युवान मुझे घर बैठे वारसदार के रुप में मिल गया । अब आज से ही तु मेरी तमाम अरबों रुपये की सम्पत्ति का वारसदार बेटा है । इतना कह करके शेठ ने उस पुत्र को गले लगा लिया । उन दोनों की आँख मे से हर्ष के आँसू कुछ समय तक बहते ही रहे ।

फिर तो मजूरी करके पेट पालने वाला वह नवजवान अरबों की सम्पत्ति का मालिक बन गया ।

यह प्रभाव है माता-पिता के द्वारा वारसा में दिए हुए संस्कार का ।

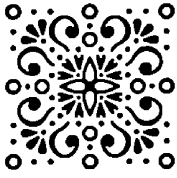

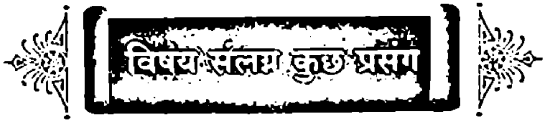

आखिरी स्टेज के कैंसर से पीड़ित परिवार का और अपने प्यारे पुत्र के जीवन का जब अंतिम दिवस आया तब उस संस्कारी धर्मप्रेमी माता ने लड़के के पास जाकर पूरे परिवार को प्रेम की भाषा में समझाकर रोना तो बंद करवा ही दिया परन्तु लड़के को भी समाधिदान करवाना चालू किया ।

लड़के के सर को अपनी गोद में ले करके मम्मी ने मस्तक पर प्रेम से हाथ फेरते हुए कहा बेटा , तु अब खूब सावधान हो जा... इस संसार के सभी स्वजनों को भूल करके अब तु अरिहंतमाता और धर्ममाता की शरण में चला जा । हो गयी भूलों का वार-वार मिच्छामि दुक्कड़म् देते रहना । और पुत्र ने भी मधुर भाषा में दी हुई मम्मी की हितशिक्षा का अमल किया । हाथ जोड़ करके अरिहंते शरणं पवज्जामि .... ओ अरिहंत , मिच्छामि दुक्कड़म् को रटते-रटते ही आखिरी श्वास लिया और हंस पिंजड़े को छोड करके चला गया ।

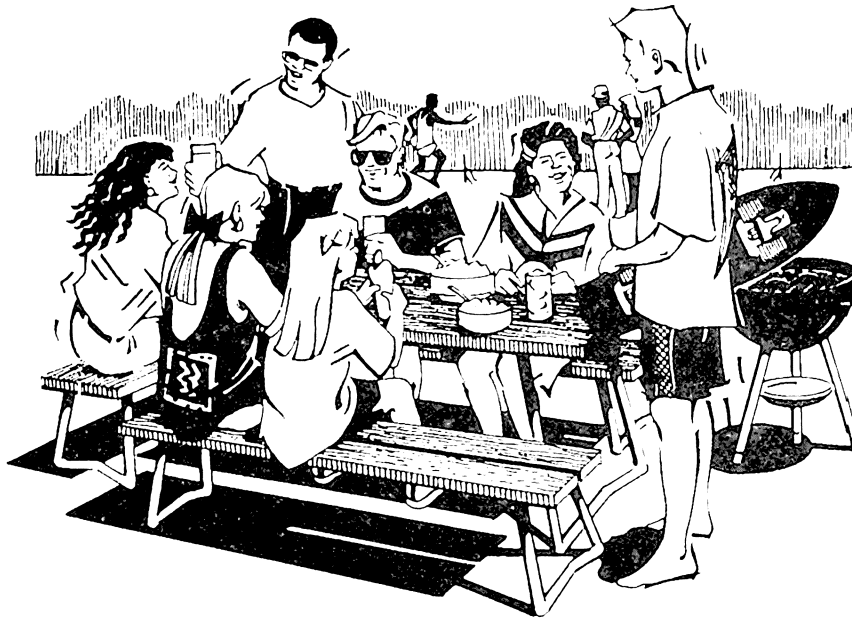

खावुं भूलो पीवुं भूलो फरवा जवानुं भले भूलो
सुख-शान्तिना दहाडा जोवा संतान ने भूलशो नहीं ।

यहाँ पर बैठे हुए सभी मम्मी-पप्पा को मुझे आज एक ऐसी प्रतिज्ञा देनी है कि जिसे वे लेकर जायेंगे कि प्रतिदिन मैं अपने बच्चों को प्रेम और वात्सल्य दूँगा और अच्छी-अच्छी संस्कारलक्षी कहानियों को कह करके उनके जीवन का सुदृढ और सुंदर निर्माण करुँगा । तो ही आज का हमारा यह प्रवचन सफल होगा और आपका समय भी सार्थक होगा ।

एक वार कदाच भूख लगने के बाद खाने को भूल जावोगे तो भी वैसी कोई बहुत बडी तकलीफ नहीं पड़ सकती है । कभी प्यास लगने के बाद पानी पीना भूल जावोगे तो भी कोई बहुत बडा नुकसान नहीं हो जाना है परंतु जीवन को सुख-शान्ति और समाधि से भर देना है तो बच्चों को संस्कार देना तो नहीं ही भूलना ।

वीतराग प्रभु की आज्ञा के विरुद्ध यदि कुछ भी लिख गया हो तो अंतःकरणपूर्वक हार्दिक मिच्छामि दुक्कडम ।।

विषय संलग्न कुछ प्रसंग

संतान को न भूलने वाले सच्चे माता-पिता वे हैं जो कभी भी गर्भपात नहीं करवाते।

श्रद्धा संपन्न और आचार संपन्न होने के साथ-साथ जिसमें श्रावकपना भी झिलमिला रहा है ऐसे अहमदाबाद के एक परिवार में पुत्रवधु को सोनोग्राफी में गर्भ परीक्षण के बाद डोक्टरों ने बताया कि गर्भ में लड़की है जिसका माथा बड़ा और पेट गागर जैसा है और हाथ-पैर सूखी लकडी की तरह है । और यह लड़की १-२ साल से ज्यादा नहीं ही जीयेगी उसका आश्वासन दिया । गर्भपात करा देने के लिए पति को सलाह दी । परंतु पति ने विचार करुंगा ऐसा कह कर पति-पत्नी को घर ले गया ।

परिवार के सभी सदस्य इकट्ठे हुए । लड़के ने पत्नी के गर्भ परीक्षण की बात बतायी । चर्चा करने के बात गर्भपात नहीं कराना है । ऐसा निर्णय लिया गया । और डोक्टरों की इच्छा न होने पर भी लड़की को जन्म दिलाया गया । ठीक डोक्टरों के कहने के अनुसार ही लड़की के स्वरुप को देख करके और कर्मसत्ता की पाशवी ताकत को देख करके क्षणभर के लिए तो सभी अवाचक बन गये । परंतु थोड़े ही समय में उस बालकी को खूब धर्माराधनाओं को करा करके खूब पुण्य संचय कराने के लिए श्रावक पति-पत्नी तैयार हो गये । अनेक तीर्थो की यात्रा करायी । मूलनायक दादा का स्पर्श कराया । अनेक आचार्यो और साधु-साध्वी भगवंतो का वासक्षेप डलवाकर आर्शीवाद लिया । उनके मुख से नवकार सुनवाया । नित्य नवस्मरण-पुण्यप्रकाश का स्तवन आदि सुनाते रहे और उसका जबरदस्त प्रभाव की उस बालिका ने गिरिराज की पवित्र यात्रा करते करते अपनी आँख बन्द कर ली ।

धन्यवाद है उस परिवार को और उन पति-पत्नी को कि जिन्होंने गर्भपात न करवा करके उस बालकी के परलोक को सद्धर बनाने का लाभ लेकर बालकी के जीवन को पुण्य के बैलेन्स से भर दिया ।

विषय संलग्न कुछ प्रसंग

भूतकालीन इतिहास में एक संस्कारी पिता हुआ है जो खुद राजा नहीं बल्कि राजाओं का भी राजा था । बहुत ही प्रभुभक्त था । विरागी था । परंतु कर्मोदय से खुद संयमी न बन सका उस बात का उसे बहुत बड़ा दुःख था । कमाल तो उनके जीवन का यह था कि अनेकों रानियाँ जब उनकी राजकुमारियाँ उमरलायक हो जातीं तब सोलहों श्रृंगार सजा करके अपने स्वामी राजा के पास भेजती । बुद्धिशाली राजा को भी ख्याल आ जाता कि पुत्रियाँ सोलहो श्रृंगार सज करके किस लिए आयी हैं । इसलिए तुरंत ही जैसे ही वे राजकुमारियाँ नमस्कार करके पिता के पास खड़ी होती कि तुरंत ही वह पिता राजा अपनी प्रत्येक राजकुमारियो से पहले एक ही प्रश्न पूँछते, कि बेटा ! रानी बनना है कि दासी ? और राजकुमारियों की तरफ से जवाब मिलता कि पिताजी ! रानी बनना है । पुत्रियों तुम्हारा जवाब बहुत ही अच्छा है । यदि सही-सही में रानी बनना हो तो इस संसार का परित्याग करके प्रभु नेमिनाथ के पास जा करके साध्वीजी बन जाओ । और सभी पुत्रियों ने इस बात को मान लिया और साध्वीपन को स्वीकार किया । मात्र एक ही पुत्री ने दासी बनना है ऐसा कहा तो उसे ऐसा सबक सिखाया कि वह फिर से रानी बनने के लिए तैयार हो गयी।

यह पिता और कोई नहीं बल्कि त्रिखंडाधिपति महाराज कृष्ण खुद और सच्ची रानी बनने के लिए साध्वी बननेवाली उनकी ही पुत्रियाँ ..... ।

आज भी ऐसे संयम धर्मानुरागी सच्चे माता-पिता हैं कि वे मम्मी-पप्पा खुद भले ही मोहवश संसार के कीचड में पडे हों तो भी संतानो को तों छोटी उमर से ही संयम के मार्ग पर ले जाने का प्रयास तो करते हैं । आखिरी में शादी में वरघोडे पर चढने से पहले भी वरघोडा के दिन उसे कहते हैं कि बोल बेटा अभी भी समय है क्या शादी के वरघोडे को वरसीदान के वरघोडे में बदलने की तुम्हारी इच्छा है ?

धन्य है ऐसे संयमप्रेमी माता-पिताओं को ।

धन्य है संतान के सच्चे सुख की चिन्ता करने वाले संतान को न भूलने वाले उन माता-पिताओं को ।

शिक्षण, संस्करण ओर सुविधा का सुमेल...नवसारी तपोवन
युगप्रधान आचार्यसम पू.पंन्यासप्रवर श्री चंद्रशेखरविजयजी म.सा. प्रेरीत

JAIN RESIDENTIAL

ENGLISH MEDIUM SCHOOL

@ NAVSARI TAPOVAN

संस्कार
मातृभाषा में

CBSE Board
(Affiliated)

Std: 5th to 10th

शिक्षण
अंग्रेजीभाषामें

SPECIALITIES

स्पोर्टस कोचिंग • प्रेक्टिकल धार्मिक अभ्यास • छोटे बालको को मासीबा द्वारा मावजत पर्युषण करने के लिए बालको को फोरेन भेंजती ऐकमात्र संस्था

३० ऐकर के केम्पस में कुच ज्यादा
देखने कें लिए बालको को लेकर पधारो

EXTRA ACTLVITIES

ट्युशन • कम्प्युटर कोचिंग • २००० से ज्यादा पुस्तको की लायब्रेरी
संगीत • ड्रामा • वोलीबोल • क्रिकेट • सींगींग • कराटे और बहुत कुच

ऐडमीशन के लिए :

२०१६ में ६०% से ज्यादा मार्कस लानेवाले जैन **BOYS** के

विनोदभाई(मुलुंड): 93210 41323 निमेश(गोरेगाम): 93242 46348
मेहुल(घाटकोपर): 98200 17716 कोमल मालदे(अँधेरी): 022-65762530/31

बालको को वेकेशन शिबिर में भेंजीए...